आरोग्य जिल्ला सम्यन्धा पुरुतहैं — प्राप्तिक विज्ञान के जान के चिना भाज हम लोग शेमी और दूखी हो नहें हैं। आहार विहेष, सब स्वन आदि हरेक बाम में भेजान बाम ऐसी तेमीर मूछ हो नहीं हैं निपोगता की पत्रक हैं। इस संबन्ध में सुख्य-साहित्य क्यांत्रित वरके कना की मेना कान कार्यात्रव का एक बाम होता।

यालीपरार्मा पुरन्ते — नाण्ड हो समात के श्रंभ हैं और बाहर-वय हां जीवन-मुचार के संस्वार पालने का भेड समय है। बाँद हम अवस्या में भटने मस्वार यह वार्य तो उपति और सुधार में बोर्ड फिंब नहीं। इस बाबाल्य की ओर से बाहडोवयोगी स्वय, पर्यन्तीत, क्या

भादि की सुम्दर सनोरजक पुग्तकें प्रश्नशित की जार्वेगी।

न्द्री जिल्हा की पुरने के भित्ताओं के दिना समाज की उसकी भतान्त्र है भागतपंत्र में एव तक की समाज भीतितित और अध्य-अद्यानु रहे तक तक स्थान के सभी जगाय जीव निष्यंत्र की समित्र । कार्यक्रम की में दे हम भीर साहित्य जवतान भादि ज्यावी द्वारा प्रयुव्ध विभागतान

समाज-सुधार श्वद्भंत्रो पुर्लों, भी विद्यात आदि हासाविक' गॅल-लियों स पुत्र गए हैं गई दूर किए किश भी सुधार नहीं है , स्वारा ऐसा सदिय भी वहीं से बहारीन दिशा जारेशा जो उनदिवांनी का दुर कार से समायक हो।

मीति की पुरमेक — मार्ग हा धर्म हो राज है। धान मीता जीवन बार माणत हो बाद है। इसीने दर बार कार कार कार मार्ग प्रशासिक सामाजिक का पाकिन हुन कर उन्हें १, ४४ ने तक बाद पूजर जारेगा तक सब दुन्य पुर हा जारा । धारण जीतिक पुरारे प्रधासिन होना मां बहुत साहत्यक है। यह कारोल्य ऐसा साहिर मा जारीतिन होगा।

तन्त्रदान - रण्यज्ञान से सर धर्म-दन्द, धर्मेन्द्राद और दूशप्रह है

frammer fa find i Muchte & die, mit meine, gie feide mitter erra 中四年 有致此不知什么必要 南北市 · 西山红 是 一一二

tel emfeten Receptules er finde motten alfe. i febrich mi whitered, what do not be the first is the state of the st 新州 并 有矿铁 科兰泰姓氏 有时 有效 医安性性炎 海 新田 经工事 美 民間 the graph marker weather and watering at the great follow Right Bungereit mit ibie beifelt ab micht , fraignean or Turk 🛊 .

Auf Rillering weite und fieben beite, bert fich For necessaria general and an ance among the second Sometime the still be a superated and high man have sell to 安全数者 知识的如果的 熟練 中心 女子子 如此 如此 with a war sweether a tree to be and

The product of many to have the feel that the " on mysery present with the same where the is and any within the BEER BOOK IN HOME & 45 THEF A KIND TO BEER BOOK whiteman of extremely come of one are that was also be "一面的 我们在 电影 好 医皮肤 表现一条 少缺" 无 碳 美衣 不敢

4 . ha. 2724 37 6.5

#### 3. 16 24

militar with the strang was graph 李敬 歌唱戏剧 美洲红 of the proper street as

etter. France self garge stoc

धानम-जागृति ग्रन्थ-माला के

# ग्राहक वनने के नियम

इस माता के झाडक दो प्रकार के हैं

- (१) सेवामार्था ब्राइक और (२) भर्यदाता ब्राइ≠
- (१) सेवाभावी ब्राहक के चार ब्रकार हैं।
- (१) द्वास्ययन वेमी शाहक—जी हमेशा कम से कम एहं यंटा रचम माहित्य स्थय पढ़ें और ययाशकि कीरों को पढ़कर मुनारें।

यदा रक्तम माहित्य क्या ५३ झार यथाशाक आशा का पढ़कर गुल्या (२) विद्यार्थी बाहक — जो विद्यार्थी हो और एक सम्बद्ध में कम से कम दो घटा रुक्तम साहित्य क्यायं पहें और ययारि

में कम से कम दो घटा उत्तम माहित्य नयां वहुँ स्त्रीर ययायाय स्त्रीरों को पड़ कर मुनायें। (३) प्रचारक बाहक-जो इम संस्था की पुस्तकों के मित्रने

के बाद फर्स्टर दिन में सामूर्य पुनाक पहुंचर दूसरे ऐसे सनता थे हेंचे हि जो फर्स्टर दिन में उसे पहुंचर ऐसे हो नियम के पान<sup>ड</sup>़ अन्य दिसों को राम्योगर देंवे । बीद चौंदे ऐसा देने बाता ने दिन की दिसों सार्वजनिक संस्था में भेट देंवे । बाद संस्था न यें तो सार्वजनिक पुनाबादन सोगबर दून प्रकारों को या दें मेरे

उमने करव उत्तम माहित्य का भी संग्रह करें। (४) सार्थजनिक बादक—कोई भी पुस्तकालय, पाठगा<sup>ला,</sup>

कम्पाराता, समावारतत्र, प्रयान गृहस्य व त्यागीगत्। सेवामावी चर्चे प्रवार के प्राइवी की इच्छानुसार मृत्य पर

क चम्य मत पुलाई मेजी जावेगी।

ध्यर्थदाना प्राहक—जो इच्छानुसार सङ्गायता हर साल भेजते रहेंगे वे ध्यर्थदाता प्राहक गिने जायेंगे।

नांट-स्वाभायो प्राहकों के हर तीन महीने के अन्त में भाग जिस अंगी के प्राहक हैं उसके नियम का ठीक पालन हो रहा है, ऐसा विवश्य पत्र कार्योलय की अवस्य देना चाहिए। यदि छः मास नक कोई कर्मन्य विवरण पत्र नहीं आदेगा तो आपका उस अंगी से नाम अलग किया जायेगा। यदि यह संस्था उसमें सेवा करती हुई अनुभव सिद्ध होयें सो गुल पाक्षिक सञ्चन हुसकी गृव उसनि करें य हर स्थान में ऐसी संस्थाएँ स्थापित करें, यही नम्र प्रार्थना है।

#### विसीत-

स्वीभाषात्त्व व्यशंत स्वाच् लोटा. | मन्त्री तथा मगतमञ्ज क्षेत्रिटा, श्री 'क्षान्म जागृति' कार्यालय, यगशे (मारवाष्ट्र) वाया सोजद रोड

#### प्रकाशित पुस्तकें

श्राटम जाएति कार्यालय से प्रकाशित पुस्तकें

प्रकार के बार्ग का जान का अभिने आध्या से पाण्यास्य प्रकार के का प्रकार के प्रका

स्वरास्त्य रहा १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८८ १८ ५ ५ ५ ५ १८

(५) वालगात—यह वालकों के लिए सादी भाषा में त्यानन्द व शिलाप्तद गीतों की उत्तम पुन्तक है। सोलह पृष्ठ की पुस्तक का मृत्य केवल श्राध श्राना।

(६) भाव अहुप्यां -इसमें विस्तृत उत्तम प्रम्वायना है जिस से आवार्षवरों का आहाप प्रमाद छोड़ने के हेतु इसकी शुरूआत करने का बताया गया है। यन सके वहाँ तक झान ध्यान में ही चित्त लगाना भेगहरूर है। यदि यह न बने वो पंचपरमेष्टि के गुर्हों को प्रकट करने रूप कोषादि चार क्याय व खहान ज्य की भावना पांच खंकों में ज्यवस्थित की है। इसलिये इसका नाम अनुपूर्वी रक्या गया है। यह विजकुत नवोनताहै। खन्त में शांति प्रकाश के साम्नेप निवारण व खालानुभव के दोहे भी दिये गये हैं। वक्षीस पठ की पुन्तक का मृत्य एक आना।

निन्त जिस्तित पुन्तकें शीम प्रशसित होने वाली हैं-

(१) बाजवोधी, (२) जैन सत्त्व प्रश्नोत्तर, (२) नैतिक जीवन: (४) श्रारोग्य शिहा, (५) जैनों में नवजीवन।

उत्तोक्त सब पुत्तकों में बिदया बागर सुन्दर हपाई और बहुया पत्तर लिये गये हैं, उत्तरोक्त सब पुन्तकों की साइज फाउन कोउत पेती हैं।

हमेरा के लिये इस कार्यातय को हर कोई पुलक कोई भी स्थित प्रकारित कर सकता है कारण ज्ञान जीव का गुल है। उसे प्रकट करने के साथन सबके लिये समान हैं। सब जीवों को मलारान का पकारा होकर वे सच्यरित द्वारा परम सुख को प्राय करें यही भावना है।

श्चान जारूनि कायालय, इगर्डा (मार्वाट)



# श्रीत्रात्म-बोध



पहिला साम



मैक्सर के काम डायुटि कार्यकर कार्ये (जारावार कुछा मोजन सेंड



# श्रीत्रात्म-बोध

पहिला माग



शिक्षत को सम्बोधन करके निया था कोर उसका भाषा भी गुल-सभी भी नवार्ष के सुमन्दे हमारे भागशहा हवा हिन्दी भाषा-भाषी बराह्या ने पढ़ी कीर के सुमन्न होगय। हवय नवहीं नशुरक्षा कवा वर्तमाण मार्ग (का.)

बन्द एवं बन्दाकों न इस मगह- वायानय । को सामद्र विचा वि मुन्नभाव रामयाग्र स्वरणाया का गिन्दां भाषा में त्रवण वर दिन्दी भाषा भाषिणे को सद्दे नाम पहेषाम सारायक है. वह भारती ने प्रवासन का गया तमें को भी दण्या प्रवा करके कि साम्यादत (क्या भाग तमें इस साम भाग कराने कि कि दिन्दा भाषा में प्रकृतित करने का स्वरूपन ह भी भाषा के निर्माण का प्रवृत्ति करने को स्वरूपन का है प्रवृद्ध करने क्या का स्वरूपन देश स्वरूपन के स्वरूपने तिला का प्रवृत्ति करने हम पर से सर्व का का साम्याद का स्वरूपन का साम हम इस

> हैं। इस एक का जिल्ला का गाणिक का प्र जिल्ला के का निर्माण की शिविधि है है है है १०० है एक की का काफ एस का का दुंबी किया के काफ की का गाणिक

्य के को भी हाता विद्याल कुछान कर को कुछा करे काहि कुमारी क्रमहास है को तिया के सहारोधाओं है कुछ कुछान



# तम्बोधन-विमाग

सस्योधन उपदेशासृत चोर का धोड़ा भाग काट में स्रभवी को मोच क्यों नहीं सिद्ध को क्या सुख है स्व स्वभाव ध्यान का साहित्य भौन भेड भावना श्रोता को सम्योधन भांतरिक भातमा का भान्दोलन शरीर की श्रानित्यना शरीर की अशरएना द्यात्मिक सुन्व की ब्रमियना धर्मोपकरए का बान्तरिक रहत्व



# ञ्चान्तरिक भावनाएं ! घातम-सम्बोधन !

है का मन ' बाद पराधीं को पर (हुमरे) सममकर समाव-राव होत, साम्प्रस दिश्यकरें। कतत काल के प्रधान कर पर् दशभा प्राप्त हुई है। इस कशभा पर गोप विचार कर ! कार्तत भव कीत गर । करें ' यह भव भी कीत लावगा की तेरे हाथ क्या बादगा १ पर दुश्यके से कार्तर दल परिषय हिया पर कार्यिस हारे (बाग्स प्रस्त, इस निवे गरे थिय ' थिय' '

जापता है से दिन है, भी हो यदि बयो व हो (जेता हो में तह सबता है, में सा बरता है यही साथ बानी है है दैनरही बीद विद्यासनी रोगों ने स्वता वे दा बया में दानी की तहा पार्तिस में या बर पर्ता है। होने के बीद में यह बर तुने दिन्छ-साब हु जिल्लुस्स स्वाहन है। यह बायम स्वयंत लाह, नेसा कू सर्वेद बया बर ।

हरार का साथा रक्षेणा ही रख विधि, दशायात है है है भगम महेगा से राध्य रक्षा होगा, दिन कार्य की सम्बद्ध बहेता सी रहेश पर पाणा - भीदहें सुगा क्यान की सामा करेगा से प्रभा माम होगा - इस्तित रही दही कारणा रख - हुन स हुन स्वद्धा विधित :

भाग को में भरे हुए बहेरे को बाद में तेकर बारते क्री को बाद तेले बादि भारतकार का मार्चा बादिये - क्राइट के मुख्यान बीमायम - स्पू में सब बाद बादे दिने हैं, के मेरे बाद में मां कुमें, देशार बाद कर बाद समाज दू समाचे दिन दिल्लाहे कारी में तेले बाद बाद : यम-किया के ममय देव विश्वित करने के लिए यहाँ है। ऐसा मोजकर स्विर दिन रखा। आन्म कार्य माउवाहुबा आगे हरें। अपन के समय समीप कीनों की याद है, इसलिए करवर की समय नुके हुन्य न हो, इस प्रकार यन पर्वक देखा, आमार्या की प्रतिकास कर।

त् उन्द्रो द्वारा पृष्य है, सुक्त महाराजा को महती सजा में पूर्ण विवार कर जन्दी स्थार करता है, इमिनिए प्रिय सत्य, हितकारी, सन्तराज विज्ञत राज्दीणबार कर ।

नंपन निर्वाह के लिए कहीं नू आलक भाव में अनर्गन व असन्यन्धारी पन कर भगवान के मार्गकों भून क्यर्पन अर्गन्यम संस्थान हो आप ? इसिंग्ए सपेत रहा

ान पर मं नेत्र मुँद कर चलने वाला मतुष्य गिर जाने म पन राजालाप करता है, जससे भी खानेत्रतुला पशासाय च ा म प्रान्त होने बाते की करना पहला है, कीर यह पशा-म मज का निर्मे नहीं परस्तु कानल भन्न के पिये करना

्रवाता को अनुसूत्र कीर अनुसूत्र संयोगों को प्रति-धन्ये समिदिनों की मिराती दे। कोरों का - कारता चार जुकते प्रधान करते भी हार - वात्रका चारा जुकते विज्ञा द्राप्य भोडार से - वात्रका चारा जुकते विज्ञा द्राप्य भोडार से - वात्रका मार्ग जुकते विज्ञा द्राप्य भागा द्राप्याणी - वात्रकाणी से मी जनत इस मार्गी वह जामा - वात्रकाणी से मी जनत हुए मार्गी वह आमार्ग - वात्रकाणी की चार्चाणी तिया द्री तरी पुढ़ाते के - वात्रकाणी की से समार्ग करता है। संकट(६९) आवें तब सहर्ष उनची इन्छा पूर्वकर, उनसे हर मत। धन्य नरकवासी चतुर्य गुल स्थानक के स्वामी को। तो त् तो य-६ गुल स्थानक का अधिकारी है। नवीन छुद्ध नहीं होगा, पूर्व सिक्वत कार्य (कर्म) थीरे-धीरे उदय भाव में आवें तो, तू उदार दनकर सब छुल सुर्ती से चुका है। अनन्त पुरुष योग से इस बस्तु की प्राप्त हुई है विशेष में सन्यक् झान और चित्रावन्या की प्राप्त तो दुष्पाय्य है, वह तुन्ने प्राप्त है, वे खब तृ सूत्र पराक्रम कर । समय योत रहा है। चौथे आरे की तुलना में वर्तमान खानु अति अन्य है।

आज के मतुष्य ५-१०-२५ वर्ष को एक भव की सुम्य शान्ति के लिए महर्निश मन, वचन और काया से प्रयत्न कर रहे हैं; किन्तु तुक्ते अनन्त भव के लिए सत्य और अविनाशी सुम्य प्राप्त करना है, इसलिए तू जितना आत्मभोग हे सके दतना योड़ा ही है, अनन्त परिक्षम भी कमें के हिसाब से अनन्त न्यून है।

साधुपना और श्रवक्षपना वही है कि, जौदारिक हारीर संदर्गों आवे हुए सानुकृत-प्रिवक्त, हुए-फ्रिन्ट, संयोगों में समता भाव रखना । जो संयोग दुनिया के जीवों को राग द्वेष के पंत्र में पंसाकर विजय प्राप्त करते हैं, इन संयोगों को विजयों न होने देने योग्य प्रम्म करना, उसीका नाम साधुपना और उसीका छोटा धंरा शावक्षपना है । भूत, भिक्षप और वर्तमान कान के ज्यन्त हुंद्रों के ऐश्वर्य और सुख एक विज करें तो उससे भी कान्त्व गुना सुख सिद्ध के एक जीव को है । इसिटिय निद्धल की मनमा रखा। किस समय खादुष्य का वंध पड़ेगा, हुझ स्वरूर नहीं है, । इसिटिय एक समय भी फार्करींद्र (फनींवि क्षयमें रूप प्रमुग्य) ध्यान में



इसका निर्णय कर । सार क्या है श्रीर असार क्या है १ इसका पर पर पर विचार कर । विचार मात्र से या शान्दिक आहम्मर से कार्य सिद्ध नहीं होगा । अध्यात्म शान-अध्यात्म विचार जब तक प्रवृत्ति में नहीं लाये जाते तब तक पोर का सेठ के भंडार का लटना और सेठ के जागृत रहने के समान है । पुर्गल-अधित्याग "देहे दुखं महा फलं" शारीर को भोगादि में प्रवृत्त करने का विचार करेगा तो सहस्र गुने अशाता वेदनीय कर्म वर्षेगे ।

## श्रात्मरचा के उपाय

- (१) धार्मिक किया की वृद्धि करने के हेतु गुप्त जीवन स्त्रीर एकान्त स्थान पसंद कर।
- (२) स्वार्थी परिचय किसी से मत रख। स्वार्थी परिचय ही संसार बंधन, मोह, तुप्णा श्रीर दुःख है।
  - (३) सोते समय आज के भले-बुरे कार्य की याद कर।
- (४) व्यवहार जीवन विवाते समय भी कहीं तेरी स्वार्ध-वृत्ति अमंत जीव की घातक न बन जाय, इसका ख्याल रख।
- (५) मन के लिए पश्तचंद्र राजिंप के समान श्रह्म समय में शुभाशुभ योग से नर्फ श्रीर देवल दशा का चित्र नैत्रों के सामने ला। मन हो जीव का यंधन श्रीर गोल का नारण है।

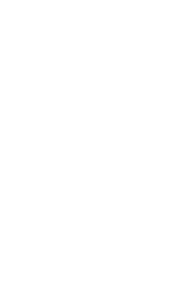
मन चेवल मन चपल अति, मन बहु दर्म बमाप; मन जीते विन आतमा, मुक्ति वहां से थाय है।













(वैवावक) का उनम को दिवाया। यथ्य प्रोनैतः के सित्राय कुन शरीर सनो की सेवा (वैदा वक्ष) से जगाने बाछे सेवकुसार की है

लत से भागे बहा की सूत स साफ सह कर । है बाल जीव! लोंट बाला पर लोड़ से साफ नहीं होता पर उसके जिये जिन प्रकार निर्मा जान का का बादश्यकता है, इसी प्रकार है प्राप्तन । श्राप्त नश में से अज्ञानहती अवकार का नाश करते के वास्त, ज्ञानावरण दूर करने के बास्ते, सूत्र सिद्धान्त पड़ने पड़ाने न्त्री' बार बाना को प्रकाशित करने की सीत्र इच्छा सब । शरीर रा स्वापाय हात की इच्छा भोजने-स्थान, हवा अर्थाद क विवार ज्ञान पृद्धि में बावरण (बाधाहर ) हैं और वे भाव प्रशान का गाठ बाच कर तेल में दुवाने जैसा कार्य करते हैं ता न इन्द्र नुष्क कर्ना किम प्रकार मान बैठा है ? जरुशी थीड : देवन झान प्राप्त करने वास्ते केशी बीर प्रमुन १२॥ वर्ष अभाग संत्र में उप नवधार्यों की सवा परिनंद सहन किये मीन भारण हिया था। इन्ड सुराक साने में आर ो प्रमु ने मुख न माना था, जो साना होता हो (एसु स्यागत की क्या कावश्यका थी ? वहीं इप्र साहितक कर ज्ञानी व सुर्खा नहीं बन जाने ? ऐसे ि द्रान्त-शाबी विषय क्याय बहाने बाहे हैं। स् साहि करने से जान ध्यान नहीं बनेगा, शर्यर 🐎 बत आयमा । ये विचार "पद्यान्त मिष्यार्था" बोने में कालकार प्रत्यत में भने ही एक पर प्रश्नी बीज के योहे महीने के प्रमान पह लास, कोडों की संस्था में देर लगेंगे ।

शिवण, प्राप्तास कार्य से स्मापण कर से स्वीदारिक दाशेर कराणा वेर्फेनी सातेना, यह पुरानण का न्यभाव है, पर प्रमाने कुछ क्यान-भर्त की न्युनण से होगी। स्थानकों से ब्याय-धर्म की शहर कर्ती कार्येगी कीर कश्तिक कर्म क्याय दूर होगा। जिससे का गण्डर-सीय कर्म क्या होगा, स्थानमें क्यायन्तरीय क्या कराने के बाध्ये कालकीर हाएल है। (कृष्टिकार क्या क्षेत्र के स्थाय ) करान्य क्यायार्थ सक्यायों कर क्यायान साम कर सही है। स्वयायी जैसे प्रथान के क्या होना क्यान है।

भेरी कारणा दिश्य बच्चार की लग्ने हैं हैं, समे बाराजासीय को कारणा मेरे बाले हैं हैं ''ई में दियेष स्वयंद्रों वैसी विरोध कात्र होता है के अध्योग का स्वयंद्र की काल होता काल होता काल होता काल का सामा के दे काल होता काल का सामा के दे काल होता काल का सामा है हैं हैं सामा की सामा है हैं हैं

# · Chilia Life.

1 12 12

स्वाह को जा नेपाई, स्था नगाना, बनुन का वान, सद कानहा को सार्यान कान्या को साथ सुद्रा को बाद का का का के प्राप्त का सुन सेनाया । प्रणामका का बीन विश्वा का स्वाह कार्यों कुमाराज्य कीन्द्र की सानुन का वाद कर की और का सुन सी का मूल की की के किए। स्वाहान का सुन की मार्थ की का का का का का का सुन की सुन का सुन की सुन क्या के सार्य की की

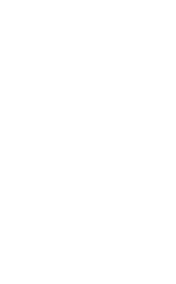


धर्म किया करने में क्या तुमें मास जमरा करना है १ क्या तुमें मनों भर बजन उठाना है १ क्या तुमें उप्साता में श्रातापना लेना है १ किसलिए भाव से तू कुछ नहीं करता १

साववां नरक की क्षतन्तवें भाग की वेदना मनुष्य लोक में नहीं। क्षात्मा ने नरक में परवश क्षतन्त भावों में क्षतन्तकाल तक क्षतन्त वेदना सहन की; उनके क्षतन्तवें भाग की वेदना भी यह शरीर सहन नहीं कर सकता। ब्रौशरिक शरीर का यंथारण भी ऐसा है। कुन्हार के ब्रवाबें में नरक के जीव की पुष्प शैया जैसी निद्रा क्षाती है ऐसी क्षतुल वेदना नरक में है।

इस श्रवस्था में समभाव से सहन किये हुए श्रन्थ परिसह श्रमन्त भव पटाते हैं। जब नरक में परवश से सहन की हुई वेदना श्रन्थ भव पटाने वाली है।

हे आत्मा सानुकल छौर प्रतिकृत वमाम परिसह यथावध्य रिति से सह । परिसह है वहाँ लाम, परस, पूर्णता, पामरता का नाराक्ती छौर प्रमुता वा नाराकती छौर प्रमुता का भी प्रमु है। इसलिए व्याङ्कत न होते सम-भाव से सहन कर परिसह को दुःश्व समम्मने वाला मोहनीय कर्म है। निर्मोही वन। स्वजन, संबन्धी, नित्र, शिष्यादि तथा पौर्गतित वस्तु पर से ममस्व भाव त्याग दक्षिण दिशा से प्रास उत्तर दिशा में ले जाना संसार-शृद्धि, करता है वो फिर रसास्वाद की इन्छा कहाँ रही ? दही, दूप,दान: छौर दूथ पाक की मिन्नता कहाँ रही ? ऐसे रसास्वाद करने का विचार मात्र भी तुक्ते क्यों होना चाहिए ? शरम ! निर्मोही यन !!



दु:स्वी है । निद्रा के समय निद्रा लेने वाना भले हो श्रासम माने पर श्रमु मार्ग में तो ''पाव समखे तितुषद'' इसे पाप श्रमख कहा है । ऐसा विचार कर निद्रा त्याग ! निद्रा त्याग !!

# तपश्चर्या महातम्य

निश्चव हो चया के अनुसार अहार करने में और उससे उत्तव हुए मन को निकानने में आत्म-धर्म नहीं है। यह वो शुभाशुभ कर्माधीन है। कम न हों वो उभय किया भी मिट जाय। वर्षमान काल में उपवासादि करना उभय किया मिटाने में सहास्य, पर्ता हैं। उभय किया पर अंकुरा सिद्धल दशा प्राप्त होने पर रह सकता है। वर्षमान में उपवासादि किया सिद्धल दशा प्राप्त करने की निशानी है।

षाहारादि उनाधि सिद्धों के नष्ट होनई है। पर हाससों को यह उनाधि लगी हुई है। कमसवा के कारण श्रांवारिक इन्द्रा ब्राहार करने के वास्ते पूर्ण बन्न लगाती है,पर खाला के क्षिप खालाय वस्तु की परीक्षा कर परात्म, पर वस्तु की इन्द्र्या रोकना ही महान सिद्धल, परमालपद प्राप्ति करने का श्रंग है, निशानों है। परेच्छा पुट्गलेच्छा शेकना ही परमाल दसा है। इसीमें बील हुझ की न्याय सिद्धला प्रकट ऐती है। जैसे श्रांन मुदर्यादि को विरोध तेज्छी बनातों है वैसे ही श्रालम्यर्भ को देशीयमान बनाने वाली सुद्ध वरश्चयों है।

### " च्ना महातम्य "

च्यवासादि किया प्रतिकृत है, समादिकिया स्तुकृत है। प्रति-कृत की श्रपेसा श्रतुकृत पर विजय प्राप्त करना महा कठिन है।



एड्सस्यावस्था में घोतरागन, संसाध में क्षिडित्न, व्यतानी में सर्वतता चीर मनुष्य में महानता हिपी दुई है।

है सी सार्थी ! तू समम. गया है कि तेरी दरा। मिट्टी में भरे हुए, जिपटे हुए सुवर्ष के ममान है। सो हुके उसे दूर करने के अधित ज्याय होटना चाहिये। उसय होट मिट्टी हटा मूल स्वरूप देखा।

चात्मधर्मः---ब्रोध, मान, माया, चौर लोभ नहीं । राग, द्वेष, भव, रोवि हाम्य, रति, चरित, नहीं । श्री, पुरुष नर्नुसक नहीं मार पंट बेदना नहीं । बिन्यु---

च्या मगुरा — एमा, निराभिमानना संदीय, रूममान, निर्मीते निरादार, मिद्धसम्ब, बीतरामन परपुर्गण्यामी, च्यामार्थी, पना: ये टी च्यानिक गुरा हैं।

चामाणि ---चर्नन पत्र, चर्नन वर्ष, कर्नन पुरुषार्थ, पराष्ट्रम, तथा चर्नन शामी, चर्नन शर्मी, चर्नन परित्री चरेर चर्नन संस्थितना । ये स्थ चाम शक्ति है ।

# धारम-संदोधन

(Castion to Sail)

बाहुत हो, प्रमाद स्थार, धरवीर पूर्वत हिंदूर बर ह

# परलोव:-वाया

(Most la gentary)

स्यु मनव को छन्ते देहन (कहा ! का देहन की सीमा !



ह्रद्मत्यावस्या में बोवरागन, संसारी में सिद्धित्व, बजानी में सर्वेद्यता और मृतुष्य में महानवा हिपी हुई है।

हे मोहाधीं ! तू समक गया है कि वेरी दशा मिट्टी से भरे हुए. तिपटे हुए सुवर्ग के समान है। वो तुन्ते बने दूर करने के बचिव बनाय हुंदना चाहिये। बनाय हुंद मिट्टी हटा मृत स्वरूप देख।

ज्ञात्मधर्मः—क्रोध, मान, माया, जौर लोम नहीं । राग, द्वेप, भय, शोक हास्य, राजि, जराि, नहीं । खें, पुरुष नयुंसक नहीं मार पोट देशना नहीं । किन्दु—

कालगुरा—इसा, निरामिमानजा, संदोप, सममाज, निर्मोही निराहार, सिद्धलम्प, वीवरागल परपुर्गतत्वागी, कालायी, पना: वेही कालिक गुरु हैं।

बाहनराजिः—बनंत यह, बनंत बाँचे, बनंत पुरुषार्य, पराजून, तथा बनंत जानी, बनंत दर्शी, बनंत बरिवी और बनंत तरस्तानना ये सद काम राजि हैं।

# श्चारम-संबोधन

(Cantien to Soul.)

जागृत हो, प्रमाद त्याम, उपयोग पूर्वेक क्ट्रिया कर ।

# 'परलोक-याला

(Most Insportant.)

सन्तु समय को कर्नड वेदना ! घहा ! उस वेदना की सीना !



हे जात्मा ! ज्यानंद मान कि ऐसा उत्तम समय तुमे प्रात हुआ है । इस ज्यवस्था में तू जो धारे वह कर सका है । मीच में यहां से सीया नहीं जा सका तो एकावतारी होने के लिये तू सार्य शक्तिमान है, नाना प्रकार की ज्याने वेदनाएं मिटाने में समर्थ है, तो प्रयन्न कर । उत्कृष्ट मार्ग स्वीकार । ज्ञात्म प्रदेश निकलते समय का जीर सेही अन के जीतम समय का दूरय तेरे नेत्रों के आगे ला जीर चेत ।

#### समय का मुख्य

श्रांख मंदकर खोलने में श्रतंखात समय निकल जाते हैं. उनमें से " एक समय भी हे गौतम ! तु न्यर्थ मत खे" !! ऐसी जाहा सी महाबीर प्रभने अपने थियतम शिष्य गौतन को दी है । तो हे जात्मा ! चगर तू महाबीर खामी का छोटा, विय, चत्यायी बनने की इन्हा रखता है. तो गौतम जैसा यन । निनटों की तेरी बाद चारों तरफ से लुट जाने बाली है। दुख, मृत्यु बौराभय-भांत-दशा के दावानल में रहकर भी तू तेरी कौनसी शक्ति पर निर्भर रह कर चुप पैठा है ? एक समय की भी जहां प्रमु के शासन में कीमत कृती गई है वहां तू सिनटों और घंटों निहा में, यातों में. प्रमाद में सीने की दिन्मत किस प्रकार कर सका है ? सैकड़ों भव बाद तुके किर ऐसा अवसर प्राप्त होगा । ऐसा तुके माछ्म होता है १ तेरी मिनडों की बायु होते भी तेरा पुरुषार्थ हुन्हें कृषे में से रह देगा परन्तु इतना पराक्रम फोड़ हुंडे में से रह लेने की तेरी इच्छा कहां है ? पासर ! चेत !!



# समृद्धिशाली का पश्चात्ताप

हे चिदानंद खाला ! कुछ विचार कर ! पांच अनुत्तर विमान के देवताओं का पश्चाताप, उनका संताप, उनकी हाय हाय, उनका दुःखहाय ! मैंने बड़ी भूत की ! में खालसीयन गया ! योड़े से के लिये अनंत दुःख। पांच लघु अत्तर कहने जितना समय भी कमें तोड़ने के लिये मुमें नहीं मिला। येला (दो उपवास ) जितनी किया में मैंने प्रमाद किया जिसके यदले में ३३ सागरीपम की छट्मस्थावस्था, उसके पश्चान् ९। (सवानी) माह के गर्भका खनंत दुःख, वाल्यावर्था का खतान, वुवावस्था में चारित्र अवस्था, औदारिक हारीर और खनंत दुसहा कप्र सहने बाद ही खंत में मोन यह की "पुर्णु-हती" होगी।

षात्मा ! तेरी प्रमादवस्था का कुछ विवार कर । कौनसी किया प्रमु की आसानुसार पान रहे हैं ? निद्रा व रसाखाद त्याग, क्याय- जीत सम भाव से रह, कौदारिक शरीर द्वारा कम कर कर । घन्य भी सुषाहुक्तमार कि, जिनकी पुरुषाई व, पवित्रता की प्रमुंसा भी पीर अमे भी तौतम स्वामी के सामने की । घन्य उन महान रिद्विवन्त महानुसाव को ! प्रमुकेपास चरित्र कंगीवार किया। उससे १५ भव में मोतारूद होयों। । तूरिद्विवान है पर सुधाहु कुनार के समान रिद्वि का त्याग नहीं वरेगा। तो खनुक पक्षाताप करना होगा ? हे चैतन ! तू किसनिये किमान करना है ? कौन सो कौर कैसी तू आशा साथ रहा है ? घनाओं जैसे उप किया के करने वाले भी सर्वार्थ सिद्व प्रधान मनुष्य भव, इसके प्रधान मोत्त प्रीय कर सके सी तेरी किया, व्यवहार, शक्ति, प्रवृत्ति, परिष्णम (भाव) किस



नूस कर, मल मृत्र फ़ेंक देने की आता करता है तो में भी सव देह दिखें को फेंक देने की आता वर्रमा । भले ही तू चलवतीं हो. सेठ हो, या कंगाल का दिंड हो, लाखों का पालक हो, या लाखों वा नाशक, प्रत्येक का सल नृमकर फेंक देने की जाता दूँगा फिर भी न मानेगा तो तुन्दे जला डाउने को आता दूँगा । फिर भी अगर तेरी हट्टी आदि पा कुछ भी अंश रह जायगा तो तुम्में सतुर में फेंक देने की आता दूँगा, जिसमे तेरा नाम निशान भी नहीं रह सकेगा । उस समय तेरा अभिमान मन का मन में हो रह जायगा । मेर पर सवा सेर का विचार कर । तेरी कड़ाई त्याग । जब से तेरा जन्म हुआ है तब सेही मैंने तेरा भी हा किया है।

### नवजीवन मंत्र

हे चिदानन्द ! लिख २ कर प्रन्यकर्वा नहीं पन सके । वहीं २ सों करने से महत्ता नहीं पद सकी । परिणाम ( भाव ) की प्रमुत्त प्रमुत्त प्राप्त नहीं होगा । विचार मात्र से बीतरागी पन प्राप्त नहीं होगा । वपदेशक बन उपदेश देने से मुगति का का क्षिपकारी नहीं हो सका । दूसरों का सामान्य कीवन देख कर हुने तेरे जीवन पर संतोप नहीं करना चाहिये । तू तेरी कारना को सब से होटी समझ कर भी दूसरों की क्षपेता उपप कार्य करने में कापमादी बन । बाह काडक्वर से क्षान्तिक लाम की प्राप्त नहीं होगी । विचारानुसार स्ववहार नहीं तो ऐसे सक् विचार किस काम के १ परिणामों ( भावों ) के क्षनुसार प्रवृत्ति नहीं तो उन परिणामों का मृत्य क्या ?

वर्तमान में पाश्चिमात्य किलोसोकर्स की किलोसोक्स सिर्कशस्त



पिर मनुष्य को दुर्गर मय पौर्गतिक इन्ह्या-वासना तेरे "नव-जीवन" के स्वन में भो पैसे उठ सके ?

जब तक नुने पुर्वात (स्मना, पीना, सोना, पैठना, त्याहि) के भोगोपयोग की इन्छाएं उपरात नहीं की, तब तक नू पुर्वाला-नंदी की तरह पुर्वाल परावर्तन में फैंस कर संसार-पक में भटकेगा।

ससी पर चलने वाले महारो पो जितना हर है, उससे विशेष टर सन्यवस्व धारण कर ज्याता को प्रमुमार्ग रूप रस्ती पर चलने में हैं। तलवार पर चलना, लोहे के चने चयाना, तराजू से नेरू पर्वत तीलना, नस से पर्वत सोदना इत्यदि कठिन है। इनसे भी विशेष कठिन प्रमुम गं रूपी तलवार पर चलना है। उपरोक्त वपमाएं भगवान भी महावीर प्रमु ने ज्यांत ज्ञान में देख कर लगाई हैं। ये उपमाएं ज्वतक तूने मान्य न को और विजयी यनने का प्रयत्न नहीं किया नवतक तू मुमुझ की गिनती में नहीं है। मन्य खरूप प्राय कर। धीरे-धीरे मोह दशा होड़।

मेपरथ राजा ने एक जं.व के जिये छाने रारीर की मांस की तरह तील दिया था। इसीका नाम दया! वे तो चौथे गुण् म्यानक के छाविकारीथे। तू ५-६ ठे गुण् स्थानक का दावा करता है जो जुने जीव दया के जिये कौनसा उन्हर कार्य करना चाहिये? जुने तेरे रारीर पर किवनी निर्मंत्रवा, निर्मोह्ता रखनो चाहिये? जहां सरीर पर मिनक भाव है, वहाँ खारंभ है कौर जहां खारंभ है, वहां सर काय का नारा है।

ं गड सुबुमात जी ने, ४९९ शिष्यों ने, मैवारज सुनिराज ने, धर्म रचि आएगार ने, टंडएजी ने, धनाजी ने, श्रीर महाबीर स्वामी ने हारीर पर से किवनी ममता उतार दी भी ? धर्म-रुचि



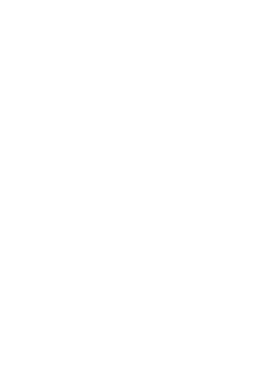
तो स्था मुसिद्ध नहीं हो समा १ तेरे जीवन से पुरुषार्थ की ही कसी है।

पुरुषार्थ, पुरुषार्थ की सन्य प्राप्ति कर निर्मा के हैं क्षेती कर होते सी मू प्रमाद स्थापने की पेटा नहीं करना । प्रमु "भी बीर " के सामाध्य में पुरुषार्थी ही पूर्व बने हैं। उसका कारण हैंदें की उन महा पुरुषों का पुरुषार्थ ही रहिएत होगा, भी बीतराम के मार्ग से जहां नहीं पुरुषार्थी की ही बिगुन कहती है। किन्तु मू सुन नहीं सम्मा । इसका कारण नेरी क्ष्मोर नींद है। निकट सबी तो ब्यानस्य स्थाप विगुत मुनने ही पकदम उठ राई हुए है। तो है बीर पुत्र ! नूभी उठ । तेरी ब्यान्सा का सूर्य बभी प्रमू रहा है। मोल मुक्ट नेरे किर पर रखने का समय ब्या गया है तो ब्यार्थ हुए समय वा ग्वाप्त कर !

### उपदेशामृत

धनंत कात में जो विषय-क्षाय-मय संसार की परिस्थिति बजी काती है। उसे झानी ही दूर कर सके हैं। पांचवें बारे का यह मूदी है हि पाप कार्य विषय, क्षाय, संसार चादि बहुत देर नहीं लगती। बाल्यावस्था निदोष है। पर बिना मुरिक्षा के गुजावस्था दाँप का पर है। जैसे केजी के बुत्त से या कोई में से एक के बाद एक तह (परत) निकज्ञती जाती है वैसे ही संसारी के संसार बंधन एक के बाद एक बद्देत जाते हैं। बीर संसारी इसीमें ब्यानंद मनाते माद्यम होते हैं। संसार का स्वभाव जन्म-मरण को बद्दाने बाजा है। संसारी संसार के बधन पद्दाने को सैवार हैं तो स्वागी संसार को जह-मूल उद्याद कोंड देने का प्रयक्त कर रहे हैं। ब्या-











ज्यों छूटती है कि नहीं ? ऐसी कॅपकेंपी ककड़ी के जीवों को मुँह के लगने से नहीं छूटती होगी ?

१४— खाजकल बहुत गर्मी पड़ती है, इसिलये विशेष स्नानं हो ठीक। श्ररे सावा के पुतले ! गर्मी में भेरू भवानी के र तप रहे हैं। उन्हें पाडे बकरे के रुधिर की अपेता मनुष्यार से स्नान करना अधिक पसंद है, तो तू तेरा कुछ खून देकरा को स्नान करा। क्या मालूम होता है ? घट्य सुख के लिये वि जीवों की हिंसा मत कर ?

१५—दाल, साग, में मिर्ची नहीं; खरे ! खो !! क्या हुआ ? खें फूट गई थीं ? ले तेरा सिर ! आदि वाक्य वाण छोड़ कर ती फेंक चठ जाता है, खरे रस गिर्छी ! ऊपर से नमक मिर्च : में तुक्ते क्या स्वाद आता है ? खरे यह तो सममादे ? खरे द के गुलाम ! तेरी हुईं। का चूर्ण मेली माता को अत्यंत प्रिय तो तू उसके आहार को स्वादिष्ट बनाने के वास्ते तेरी हुईं। का चूर्ण दे। क्या दे सकेगा ? चमड़े की जीम के स्वाद के वास्ते खसंख्य । प्राणियों के वच करने का कसाई छत्य तू च्यों कर रहा है !

ो प्रािियों के वध करने का कसाई फ़त्य तू क्यों कर रहा है ! १६—श्रन्न यही विष्टा; श्रीर विष्टा यही श्रन्न, तो दुनिया में ऐत वस्तु कौनसी है १

१७—हे शौकिन ! वृँट को कीलें, व एड़ी लगा कर पहनते, , तथा ऊंची दृष्टि रखकर चलने में ही तृ सुरा रहता है, पर हिं! इससे कीड़ी खादि को क्या दशा होती होनी ? किसी त इसपर विचार किया है ? उन प्राग्ण विदारक वृँट पर चलने हे अपना क्षेत्र है कि त नलवार की सार पर बलना सीलें!

ो अपेता श्रेष्ट है कि तू तलवार की घार पर चलना सीखे। १८—सूर्य भगवान का तीक्ण प्रकाश इतना तेजोमय है कि



ु उ—जह में या चैठन्य में तुक्ते स्पाटेशमात्र मी शिवता माञ्च ुँ हुई दे १

८-चोर को सबी बातों का ज्ञान है, तुन्ते नहीं ।

९—शरीर का सन्यन्य काष्ट्र की तरह वितक्क भिन्न है— तमे करता कैसे माद्यन होता है ?

१०-- तुने क्या नहीं दिखता ? अन्यतपना ?

११—शरीर को खी, व पुत्र के समान भिन्न समस्ते , वे शानी हैं खीर की पुत्र को खपने मानते हैं वे मिध्यादा हैं। शरीर को खपना समस्ता महामिध्यादा है। समदिष्ट को की पुत्र के समान शरीर भी भिन्न दिखता है।

१२-भिन्न समने वह बाजा संसार से भिन्न है। जो भिन्न नहीं समने वो दनकी बाजा संसार में शरीर की वरह जड़ हैं।

१२—देह व घाला को एक समनने वाला धर्मत संसारी, मिष्याली और कृष्ण पत्नी है। देह—घाला को मिल समनने वाला परत संसारी मंदी सम्पक्ली और शह पत्नी है।

१४—समर्वा को शरीर प्रत्यक्त में भिन्न नहीं रिग्रवा, भवी को शरीर प्रत्यक्त भिन्न दिख्ता है।

१५—काष्ट और शरीर की भिन्नता का चौर को जो विचार काता है यही विचार शरीर से भिन्नकों का तुक्ते करना काजाय तो तू सम्बन्तीहों जाय।

६६-रासेर संग से निष्ट भवी लग्डा पते हैं

रेअ—पोड़ा मान कष्ट में से पूटने में कानंद होता है ता सारी कवप बालो दालव से सूटने में किउना कान्द्र कानंद होता है तो सारी कवपवाली हालव से सूटने में क्विना कानंद हो ।



## अभवी को मोच क्यों नहीं ?

 -ित्तिय विभाव देशा है वहां पुरुषत देशा है, पुरुषत क्या है वहां चाल देशा वा चभाव है।

- - बुद्रगम दशा वही जह संगी दशा है, और जह संगी

स्सा वही संसार दस्त् है।

२—म्बांत कर्यात् सम्बन्धः की योग्यता, कीट स्वरूपद्याः वहां कान्यद्याः है।

४—कालातन होना यह भवी का चिन्ह है, पुर्गत रिपासा यह भन्यव की कतिकटता का सक्य है।

५-- आत्मद्द्या वहीं मोल हैं. पुर्गत द्या वहीं वंध है।

६—आसामन्द्र बहु हामानन्द्र है और वही निकट मन्दर्शा है। पदन्यतानंद्र देहानंद्र है और वही अमन्दर्श है।

्र प—कमबी और उड़ में क्या भिन्नता है १ विकास दोस्यें संसार में रखें हैं!

८—पड़ी सड़ होटे भी कलें से बतने की शकि रसती है और अमड़ों में खरनी बैडन्य राक्ति है।

९—पुर्मेश वर् क्रमशे से निष्ट कौर मशे से दूर है। १०—स्त्वमान का झारा वह मशे और विमाद बाहा क्रमशि है।

११—विषय मुख के श्री उहासीनता वह निकट भवी है और हिन्द्रय मुख में दर्जनता रखदा है वह अभवी है।

१२—पुरस्त के साम दीव भद्र होता है और समाव से हुद्ध रहता हैं।



२२-- झात्मा संसार में या सिद्ध श्रवस्था में मृल खरूप से मान है।

२४—पानी खन्छ है। रंगीन शीशों में भरने से रंगीन पानी इंद्रता है। क्षांत खन्छ है, रंगीन चश्मा लगाने से सद रंगीन देखता है। बाकी पानी कीर कांद्र मृह खरूप में शायम है।

२५ - श्रात्मा कर्म पानी शीशी । एकमेक होने का अनादि काल का

स्वभाव है। शीशी पानी को ध्यपने रंग सायना हेती है। सिद्ध को क्या सुख ?

१— कुए का मेंडक समुद्र का भाग कैसे निकाल सक्ता है ? २—पूर्ण स्वरूप अपूर्ण की समम्म में किस प्रकार येठ सक्ता है? ३—श्वेषा पुन्यू सूर्य प्रकाश को कैसे जान सक्ता है ?

४—सम्यक दशा के मुख भी न समझ सकें तो सिद्ध के मुख कैसे समझ सकें हैं ?

५—श्रेणिकादि श्रसंख्य सम्यक्ती जीव नरक में किस प्रकार सग-भाव से रहते होंगे १ जब चौथे गुणस्थान का खरूप भी न समक सके तो सिद्ध के श्रुख किस प्रकार समक्त सके हैं १

६—तीर्थकर प्रभु भी मोस सुस्र का वर्णन नहीं कर सके। ७—सिद्धता वहां पूर्णता।

८--मच्छ जन्म छेते ही तैरता है वैसे ही सम्यक्त्वी का वभाव तैरना ही है।

९-सोधना लिखना छोड़, कर्मतोड़, निवृत्ति जोड़ ।



धास है रवनी प्रश्नि क्यों नहीं? "सद्धानर्म दुल्लहा" का क्या में है ?

९—सपतुष कृषिकार विश्वासी हैं। भूखे रह कर भी धान्य कर फसत लेने का विश्वास रखें। । इस दृष्टि से आल-सुख !धासी में कितनी त्याग कृति की दृद्वा रहनी चाहिये ?

७—- स्वतंत्रत को बत समस्वर स्व विश्वास से दौड़ कर प्राप् देवे हैं । वो स्व-स्वभाव में कितनी श्रद्धा होनी चाहिये १

्र ८—उन दूसरों को ठनते हैं तू साहकार होकर सुद करने वो हो ठनता है।

S—रूट पर वैसी राष्टि पड़ती है। क्षनिष्ट पर वैसी ही राष्टि इसी पड़ी थी ? रि—प्रतराह के समान निर्देश के भी क्सी राए हुपैभाव से

गाये थे, याद है ?

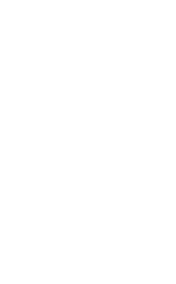
: ११---नेरस को सरस समन्द्र कमी हर्षमाय से स्वीकार किया या १

१२—प्रसंशह की निंश और निंशक के गुलगान हिसी समय किएे हैं ? काला सिवाय करण कोई साली नहीं हैं।

ं १२—हाती के समस्रये बार मी तू मुद्दित पुर्गत चुन्दक को क्यों विषक रहा है ?

ः १४- मन्दोड़ा ट्टता है पर हृटता नहीं, ऐसी क्या तेरी दरा। नहीं है ?

१५-- आधुनिक मृति महामोहनीय बांबने वाली है। या इससे मी विरोष बढ़कर १



५३--चौद्द रात का स्तेह स्थान, शिवपंथ की मल,शास्त्रत । मांग प्रशाधत की दे जाग ।

५४—दरगतानर होड्, बामानर जोड्, खलमाद माथ, ाधात चेका

५.--परनाप में बाम तो शिब सुख का नास, पुरुवत की 13 हो डान्स की पात **।** 

५६--परागर में पूरा संसार में दूरा, संसार में दूरा, ख-दस्य में ऋष्मा ।

५३--मन्द्रस्य ने ऋष्य उनका मंत्रार में पूरा, पुर्वन

्रोदर, क्षान व्यगेदर । ५८--विभाव में दास, मारुभाव का नात, विभाव में गाँव ार सम्बद्धाव है इस्ये ।

े ४५—दुदरत सुराया, शाम सुमाया । े ६६—दिचार देशस्यो, स्टबं व्य निर्मेर्स ( निमगरी ) ।

६१-दिवार में मझ, बार्च से सह ।

६६--विषय पान है कि हुए पान है । पहना है कि

. गुरुम है ।

६६-निर्मत काम प्रपृति है, प्रशृति वह या-काम नित्ति है।

।ध्यान का साहित्य ! ध्यान साहित्य.

१---मनेरीफे श.निज्ञ के मुख श.व भरि वर विवार बार र्-मामहार दर्धे देशामा मे सरा माहिम प्रदार

रहें हैं है है होए।



१४--इक्षी मुनती, समय की भावना, खाला का खयोगी बहोल स्वरूप रहते भी राग, हो प से कर्म शरीर डोलायमान हो जाता है तथा छा काया की घात का मशीन ले कर जहां तहां होड़ता फिरता है, धन्य उस खरूपी खबशा को !

१५-हे सेटजी ! कलम से तुम लिखोगे कि इस इमड़ों की बलम से तुम खुद लिखाओंगे !

१६-हे सुतार! कर्म रूप लक्डी को वू चीरेगा, कि वू

१८ - घरे कुंभदार ! भिट्टी को त् कृटेगा कि मिट्टी तुके कृटेगी !

१८—हे सोनी, हुहार, तुन घड़ोगे वा घड़ाश्रीने !

### मौन

१--मौन, मोत्त का चतुत्तर मार्ग है। विभाव दशा को त्याग स्वभाव में लाने वाला स्तंभ समान है।

२—मीन, खभाव में लीन यनने का उपदेशदेने बाहा सरया गुरु है, खाला का स्वभाव है।

२ - मौन बीतराग पर का ऋतुमक कराने वाला है, क्रिक्ट. क्ष्माय को नाश करने वाला मौन है।

४-मीन, विषय स्पाय को रोक्ते का फेंद्र-सार्गी

५-मोन सहुद्र समान गंभीर है, नहीं समान स्वाप्ताः अ

६—मीन, यही भगवान महावीर का सुनिय्द्र र ७—मीन, बाज्य समाधि का सुन्न र्यंत्र है



१८—भेदहात ही संयम वा सार है। भेदहान ही यथा स्याद परित्र है।

११-भेद ज्ञान यह लघु वेषत दशा है।

१२---रवासो-धास विना जड्ता, उसी प्रकार भेरतान दिना ऋकान रुपी जड्ता ।

६६-- 'खाल्लाण भावे माले विद्राह'' यह भेद शान ।

१४-भेद भाव विना धनल संसार, भेद भावना से धनल गुरा।

१५-भेद भावना भव न'शिनी, भेद झान से, अभेद (बेवल) झान की प्राप्ति।

### श्रोता को सम्बोधन

६—पुन्य पाप के स्वरूप को सममो, बकरों निकारते हैं है न पुने, कुन पर-संसार के कार्य हाथ से करों, नीकर से कराने "हम पान से बच गए" ऐसा अब निकान टालों। सुनिराज खपना होटा सुधा पड़ा सब कार्य सुबं करते हैं। उपयोग रहित नीकर से प्रत्येक कार्य में विशेष खबला होती है।

२—शुम में प्यादा न यन मके तो सिर्फ रोज १ मिनट प्रशृति मार्ग से घटाते रहा । पार वर्ष में तुम सम्पूर्ण निष्टत हो जाकोते ।

२—पोजीटिव्ह और नेग्टोव्ह दो बार के मिलने से विशुन बतन होती है एसी प्रकार साधु और भावक का सत्य संघटन समाज में नई जागृति पैदा करता है।



८—वस्तु की कीमत नहीं पर समय की कीमत है। मजदूर कों इंटें उटाकर जीवन पूर्ण करते हैं तो भी उनकी और कोई गंख उठाकर भी नहीं देखता। श्रीष्ट्रच्छ ने युद्ध मजदूर की ब्हायता के लिए एक इंट उठाई थी। यह प्रभु ने समवसर्ख में ब्हानी श्रीर गणवरों ने ज्ञाल में गंथी।

९.—पशु संसारी श्रीर केंद्री संसारी सच्चे श्रावक या साधु ही श्रपेत्ता परवश रहने के कारण श्रपनी श्राग्ना विशेष दमते हैं। पर यह व्यथं है, पर ज्ञान सहित क्रिया करनेवाला अन्त मुहुर्त में केवल ज्ञान के समीप पहेंच सक्ता है।

१०—मृत्यु के समय मनुष्य मात्र प्रायः निप्रंथ वनते हैं वे जीवित रहते निप्रंथ वन जायें तो सच्चे झानी हैं।

११— प्रापभ प्रमुजी के शारीर को उनके पौत्र श्रैयांस कुंबार ने इक्ष रस बहेरा कर पोपाथा श्रौरमहाबीर प्रमुके शारीर को चंदन बालाजी ने उड़र के बाकले बहुरा कर पोपाथा। महाबीर स्वामी के लिये उनकी सामु के छोटे हुए नवस्त्र की श्रुपेजा बाकले श्राप्टिक कीमनी थे।

१२—महाबीर को उनकी साम्र ने नवरल से बधा जमाई समक्त संभार की समाईमान संसारयहावा था। पर चंदनवाला ने धर्म गुरु समक उड़द के बाकुतेयहरों कर संसार का श्रंत किया। विशेष कीमती नवरल या उड़द के बाकुठे?

चंदनयाला की गुण ग्राहकता

१—हे जननी पदमावती ! तू मुक्ते मौस विंह में जन्म दे सुक्त हुई, पर मेरी मीता मूला ने सुक्ते महावीर परमात्मा के दुर्शन



के कि करें इस के कुछ के करें कर के की की की के इस करका उन्हें के कहा की

क्षित के क्षेत्र के क्ष क्षित्र के क्षेत्र के क्

क्षेत्र के क्षेत्र के

The same where the same of the



दर्शन प्राप्त कर प्रत्येक मनुष्य वा खशान खंघकार नेरे मौन रहने वर भी दूर होजाय, वैसा प्रभावशाली वन ।

पृथ्वी के समान—सहन शील खौर धाधार भूत जीवों की मात्रा के समान पन ।

श्चीन समान—उज्ज्ञल कांतिबान यन, तपनेज से श्रमि ब्बाला वन, एक हाँ दिशा में, उन्च दिशा में सिद्ध शिला की श्रीर वहां के निवासी सिद्धों के तर्फ तेरी श्रह्मिश टिष्ट रख, ऊँचे नेत्र कर उन्हें देश ले श्रीर चैसा नू यन जा।

टाच के समान—विशेष आदर्श जीवनी वना। मीन रह कर म्यान उप्ततता बड़ा, जिसे निर्मल होने की इन्छा होगी वे लाभ लेंगे।

हाथों के समान-परिसह के समय सहनशील दन तथा खबने पर को याद कर । जीयम उठाने वाला बन ।

पृथम के समान—समय-समय स्व लहुता दिस्तते, दित रात रृष्टि नीची स्वतं, जगत का उपकारी होकर जगत का गुलाम यम, जीसम उताकर सामें बहुता चल ।

सिंद् के समान-विश्वह से निटर वन, काल-धान के मद में मरत, धावपुत वन, जीवन प्रवाह को खारी बड़ाया कर ।

सपे के समान—दर्श के समय तथा एपला के समय 'दिल प्रदेश' का दिवार रग। मां त्याणी हुई कोदली की क्यार नहीं देतना, वैमे हो संसार के दिपय को २२ दिवय को विनिश्त कर उनके प्रतिकृत स्थिति में विचर। त्याणे हुए दिवय की कोर हृष्टि भी मत कर।



<sup>प्रकृता</sup> वैमें ही विषयानन्हीं मनुष्यों को श्वासिक सुरा की धी बाग-योध . - भीता का रूपाल नहीं का सकता। ८—नहीं तह नू भाग विज्ञात को चंह कोशिया :

तमान विर्यल नहीं समगता, धीर सर्व, फांचली त्याग कर जाना है, येने ही भाग से खरकर पीछे नहीं हटना, नव निध्य समक्त कि थानी पुहल परायनीन करना शेप है। ्र ५—विषय पामना घट नाय तो वहीं घरम पुड़ेल परावर सम + छेना चाहिए ।

# धर्मोपगर्मा का त्रांनरिक रहम्य

१—प्यासन के रम्भी लगी हुई है, उसी प्रकार मेरी प्राप्ता कर्म समृह से लिखी हुई है। पर जिस प्रकार श्रासन से रस्ती अनम खुन सकती है चैमे ही श्राहमा में कर्म समृह पुरुवार्थ हारा र—यामन पर श्री रम्मी दूर होते ही जैसे पुँचणी श्राम । श्रीर श्रातन श्रातम हो जाना है वैसे ही कमें वर्मणा रूपी सभी

्राह्म होते ही प्राक्षा धौर शरीर खामाविक विभक्त हा जाने हैं र्थी। श्राह्मा को मृत मिछ श्रवाद्या प्राप्त हो समती है। २—मंकुचित किया हुआ श्वासन विशेष फेंग सकता है ्र विते ही पुरुषार्थ द्वारा मेरी श्रातमा की छुवी हुई श्रमस्त शक्ति



्रथ—'इरियादही' का पाठ बोलने समय प्रमान्त्रीरा स्थापर हो को सर्वेद्या रक्षा करने की भावना लागी पाहिए।

्रह—त्तमहत्तरी का पाठ वोत्ते समय काजा को प्रति म विरोध हांच्र करने की सातमा तानी काहिए।

१३—च कम्मा के समय रासेर का भाग हटा आरमलीत ने की भावना लागी चाहित्।

१८—लेगसम् का पह बोहते। समय चौदीमः वीर्यक्रों के ए राजकर वैसे करते की भावता गारी बाहिए।

१८—समाउद पूर्व होते पर "विकार है मेरी विषय क्याय य प्रमुक्ति को कि काल-धर्म होड़ मॉम्परिक कार्य में प्रवेश रहा हूँ।" मईब मेरा काल धर्म में ही डीवन क्यांत्र हो की, मी मावना नार्य काहिए।

#### वारह बत

#### च्यवहार झौर निश्चय से

बर १ मा—दर बींद को करना सा समस सदकी रहा इरमा यह स्वदग्रह कर कीर जो कामा जींद कमें दश हो हुना इनका है उस करने जींद को इमें दाय में सुद्वान कींट कामा दुख रहा कर सुद्ध हुद्धि करना यह सदका है क्यांन काम द्वारा मेफान हुट कामा को निर्माण करना यह निष्ठय आदातिस्ता विस्माल कर है।

्रवर र स—मृत्र बोल्य नहीं पह व्यवहार इन और वैद्यतिक बलु को काधी कहता। यह तिमन मुणवाह है।



शांत भाव या बीतराग भाव से व्यवहार करे यह निश्चय सामायिक प्रश्र है।

व्रत ६०वां—मन पचन श्रीर काया के योग एकत्र फर एक स्थान पर बैठ धर्म ध्यान करे यह व्यवहार श्रीर ख़ुत ज्ञान द्वारा मजीन विचाम का स्थाग कर शानवंत जीवों के गुणानुवाद करे यह निध्य दिशावनाशिक मन है।

व्रत ११ यां—शाठ पहर तथ समता भाव रख सायय प्रवृति त्याय निरामभी ही विचरे यह व्यवहार और खपनी आला को सातादि में पेंच कर पुष्ट करे यह, निध्य पेंच्य व्रत है।

श्रन १२ वां सापु, मुलिराज, तथा स्वयमी श्राहि सुपात्र जीवा-स्माची को स्वयमी हाकि मुशासिक दान है वह व्यवहार चीर स्वयमे तथा परकी स्थानम को सान दान हेना, पहना, पदाना यह निश्चय स्वतिथ प्रव है।

#### क्षचेदह नियम निश्चय भाव स

र मधियः—एक मधिय ने १२॥ कोड् भव बाद रराधक कों में धैर से शंगेर ने साथ ज्यारी थी। विवा वैरमाय की।

२ द्रव्यः—बुह्मचानंद् यह पुरुषातः प्रमावतेन कसते । बादाः चीर संसार में भवाग करने बाहा है !

के भारत को लेगानि १४ रिनम की मर्थोद्दान्तरमें बाहिये। अ-मर्थोदिन में बन में क्या वर होता है है गई। बनर बनाये गये है। इसके जमार वर इमेगा १४ रिनम विनारे मर्थोद्दा करें।



#### फुटकर विपय

## स्वतंत्र विभाग

उत्तम याक्य, वेदनी के समय का कर्तव्य, धारिमक मुद्रालेख (Motte) चार प्रकार भव विद्रारक जानने योग्य स्वलाभेद



न मुख, न सन्त है न अस्मान, किये अनंत काम से दहा। देश आगरहा है और देश अका है।

5-संसार से सारे कर्य हुते हैं और घरे वहीं कार पहार्ष है। इस उर्देश की बाद रख मरत महागढ़ कारिसे के सदस में और सार देशे माताज हाथी के हीई पर संसार में ही देवल साम प्राप्त का सके थे, तो रेसे दल्द विचार और निर्मेश माजनार्य रहाना पहिसे?

 अ—संस्य सुर में लेक नहीं स्वतः चाहिये और पहु बृतियों के काम्में सहीं पहता चाहिये.

८---स्य और राज्य समस्य से सहस्र वरो

९—संसर ही संस्वदान हमेरा विचर हसे।

्राच्यात हा करेंद्र स्पानक होते. स्वास्त पात से हार्क का मादन है त

११--वर्षमार मृत कौर मजिला का दिकार करें।

(स ! क पुरेष क्षांतर कैना है !

(६) सूरका हे केटा छा

( क ) सरिया में क्षेत्रमी राष्ट्रियान होती 🕻

( ३ ) कमी मृत्यु होडाय हो बीमक्की रावे प्राय हो ? १२—मृत्यु पाठे मण्यांत यहीय पढ़े दमका विचार बते ।

१६—रह फ़िल्म भी बाई चैड़ायान राजा जहाँ पड़े ऐके बनोड़

६९—मुखु के नाम में मध मठ लाको पर क्षे करो । ६५—बेरनो के पेंड में खेलते नवन म करो पर क्षे करो ३ ६६—चंद्र, सुदी डैने निर्मात करो ।



२६—महिरा रिया हुआ वस्मत मनुष्य विस प्रकार सी को भाता और भाता को की कहता है वैसे ही संसारी जीव भोह फतात्वा में सत्य सुख को दुख्य मानवे हैं और दुखसागर में हाजने वाले को सुख का विधादा सममने हैं. धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म कहते हैं।

२५-स्वागते की बस्तु का संचय करते हैं और मंचित करने की वस्तु को निजांबजों देते हैं ऐसे मूर्ख कीन हैं ? ओ संमार के विषयों में लॉन हो । खड़ा ! मंसार को विवित्र दशा है ।

२८—आपे सेर अस्न और एक टुडड़े वस के लिये मतुष्य विवामांत रह हार रहे हैं. भाग्य शाली पुरुष धर्म-त्व पहिचान मले हैं।

- e ·

(---दुःसी को दिलासा देना चाहिये किंतु हिन्मत झोड़ कर
 वबड़ाना नहीं चाहिये।

- — एक खरझी माता सौ मास्टरों का काम करती है। इमिल्रेचे खरनी बालिकाओं को व्यवहारिक खोर धार्मिक शिक्ष देना चाहिये जिससे भविष्य में वे चालिकाएं करकी माताएं वन ।

्--विषयासक मनुष्य सहा दुःसी खौर निर्वत है।

४-- जिसकी तुम्रा विशाल है वह हमेशा दिखी है।

प-स्तराद विचार करना विष पीने के समान है।

६—दिसने मन जीव तिया उसने जगत जीव तिया। ७—दिसने कान जीव तिया वह सद शृरवीरों में

प्र—विसन काम जात जिया वह सब शृह्यांसा है सरदार है।

 द—क्रान गर्व के तिये नहीं पर स्व और पर के बीय के तिये हैं।



६---हारू, मंन और खुन ये दीन बन्दुय शरीर की हैं। हाड, मौन सीर सन को पह मन रस !

 चेहती के मनय रमभाव स्थाने में द्वार वेहती का चय होता है भाव में अनंत जनम,जरा,मृत्युकी पीड़ा बमहोती है।

८—मानदा है नो दुस्य है, न मानदा होतो अनंत मुख्य है। ९—समहिष्ट लोब है दिक खादि नरक में रहते भी समभाव रमस्ट्रेटिसं द पौचरें, हुटे और सहवें गुएत्यान का अविदासिंहै।

र०—देश्नी कातृ बुद्ध सीवर कही है जो उसके दुर्जने से द्य राय । देवनी यह तेरे अपर या मैंह है, जिसे दूर करना तेरा प्रदान रासंद्रय है।

मि—हाइ, सॉम क्षेट गुन काहि दस्यन हैं। पाना है निक्त रेत के लिया पोना है फेरिके के लिए और प्रानता है पाइने वे जियु ये उरत के तम साम निज्ञन हैं और उनरी सामि में मुख बन फैन कार्र हैं।

#### त्रास्मिक मुद्रा लेख

·—ो प्रामा ' एशन में सदनु हैंट । २—रे सामा हेत् देरे सका में रम ।

२—हे बहना ( तृ परमहना बनेताः

४—ो चान ! तृ घात, परावे भेर दा विपार दर

५—हे जाना ! मू हीन है ! दर्श से जावा और वहाँ लावेगा इनरा एतांड मनव में विचार घर ।

६—हे जैन र सर द्वेप की जीता।

थ—रे चिदातंद ! रह चिटानिए प्रस् ।



श्रीकान्य-सीध २४-हे सत्य के इन्ह्रक ! दान, दया और सबना विना

सद दर है। २५-दे मसास्तर ! दंग विकट है (मोहक्याय बाटकर्मादि)

ते हैं जिससे भंपहर हा है। मावधान रह ।

२६-हे ब्दौपारी 'आभिक दाय के हिये ऋसंवीपी रह र विषयादि में संदोप रख ।

२७--हे शिवाभिक्तपी ! दान शिवक वर्ग की मावना भाव । २८—हे सम्बाभितायी ! इष्ट क्षतिष्ट, संबीग स्वान ।

९—हे शुरु कोर! वर्म तेरे नौकर हैं। तु सतंत्र राजा है। ं-—हे जाती ! सप्तरिन रूपी साइस वेसी जीवन रस्की बाट

ŧ. र—हे करणातिथि ! करला दृत का पान कर । <िच्छनंत राखिमान झाना !नृतिसपद के प्रामकरने के तिये

र्गं व्यस्थित हुई है बही मार्ग यथावध्य रोति से न प्रहुए कर । ३३—मेडिये ही तरह स्वस्वत्य हिना। मेडिया मद बना।

३४-हान्यदि एवम् कीवृहतादि वा स्वप्न में भी परिचय स्वा

३५--मानादि श्ववसरों में देश मात्र भी स्रोभ मत स्व । ३६--चौदह रत्नों का यथातथा रोति से पानन कर ।

.३७--पौडगतिक परिचय के प्रपंच का त्याग कर ।

३८-एवं बात के परिचित्रों में से एडाय भी परिधित धर्म ान और राष्ट्र ध्यान के वृद्धिकर्गी नहीं

३९-एक्टेंट सुप्र बीवन बना। बास जड़, श्रंटर चैतन्य दशा ह्या यन ।



१४--वर्भ की खानि खौर समाज की दुईशा पर रिष्ट को। सब सन्जन इकट्टे हो उसका उप्हार करने के लिये कमर इसो।

वि॰ ध॰ इंडेरी ( न्याय विजयजी )

#### चार प्रकार (चार भेद )

धर्म के चार भेर—दान, शीयल, तप, भावना । व्रत्नो के चार भेर—सिंह सिंह; सिंह सियाल, सियाल सिंह, नेयाल सियाल ।

चार गोरु—मनयन का, लाख का, लोहे का, मिट्टा का।
देवता में से आये हुए जीव के चार लज्ञ्य—
उदारिचत, सुस्वरकंठ, धर्म का रागो, गुरु भक्त ।
तिर्यंच से आये हुए जीव के चार लज्ञ्य—
अविनयी, अंसतोषी, कपरी, मूर्छ ।
मनुष्य से आये हुए जीव के ४ लज्ञ्यः—
विनयी, निर्लोमी, धर्म मेमी, सब को प्रिय ।
नारकी से आये हुए जीव के ४ लज्ञ्यः—
कोधी, मूर्ज, हुए स्वभावी, अन्यामी ।
देवता ४ कारण से, यहां नहीं आते—
कामभोगमें वहीन रहने से, नाटक देखनेमें तहोन रहने से,

देवता ४ कारण से यहां खात है—गुरु की नगस्तार करने, तपश्चर्या की महिमा बदाने, तीर्थंकरों के उत्सव करने, वचन यद होने से ।



वेडनीयहर्न-असीम तथा शकर से लिपटी हुई बहवार की ंर के समान, बाटने से मीटी लगे पर जीम कट जाय।

मोहतीयहर्मः-महिरा पिये हुए मनुष्य हे समान सत्य पर्ने खदर न पड़ने है। बावध्यक्रमः--हैर्याने के समान, चार गति में रोक रक्ये। नामहर्म:-वित्रहार के समान, श्रद्धा, बुए रूप बनादे ।

गौत्रहर्मः-हुंभहारके समान ऊँच नीच हत्त में स्लन्न करे। र्श्वतरायक्रमी:--राजा के मंहारी के समान धर्म ध्यान न रने दे ।

्र देहर्जी बाला जीव ४८ मिनट में ८० वक्त जन्म मृत्यू करता है उन्हों बाहा जीव १८ म्दी बाहा जीव १८ संद्वादंचेद्रियद्या जीव .. ., ₹% ., हीं का जीव निही में ... .. १२८२४ ,, नी का जीवपानी में ,, 1. 1. 11 प्रि हा जीव अग्नि में .. ., १२*८*२४ ,, \*\* छ का जीव वार्ड में ... ., ' ,. \*\* \*\* •• री का जीव हरी में ... ., ३२,००० ., \*\* द्रत्तका जीव चंद्रमृत में.. .. ફબ્ધફેફ .. ाही का जीव मिट्टी में असंख्याते वर्ष तक रहता है।

ानी का जीव पानी में .. रिप्त का जीव क्रिक्टि से ... ाषु का जीव बाद में ..



उ—हुए का पाती जब तक साफ न हो तब तक घड़े में हा पानी नहीं आसकता और न आने की आरा। हो रहती वैसे ही जब जक साफ सहुराय नहीं सुवरेगातव तक जन सहु। के सुवरने की आरा। तीन काल में भी फर्ती मृत नहीं हो सकती। किर को प्रथम आपनी आत्मा व सहुराय का बहार करना था. इस ए रेरा। वर्ष तक मौन रहकर बोर तरक्ष्यों की यो। वर्षनान के सुशारिक संवय्य की की के सर्वा करनी र मार्च कर नहीं, तरक्ष्यों न हो सके तो न सही सिर्फ अपने र मार्च हो जो आसावारण परिवर्टन हुवा है, उसे उच्च कोटि में ले ये तो हर एक महाच पर उन सुनि की वैसाय की गहरी हान और वे मार्च कमरा। जीवन में पटावें तो साच समाज और

र समाह का ददार हो जाय ।



# ञ्चात्मवोघ (भाग दूसरा)

#### अनुक्रमिशका।

विषय	प्रष्ट	लेखक
(—ऋादर्शदान	ę	चीर पुत्र
र—बादर्श पग	Ę	וו
<del>१—पु</del> रिया भावक	₹–₹	זל
४—सरएक भावक	₹ <b>−</b> ₽	77
२—प्रमंद चेर	૪	77
६माथा सँदारवे महाराष	श ४	77
उ——इन्द्र दसन	<b>ં</b>	77
८—गुरु वार्	<b>્ર</b> –૬	<del></del>
५—दो महाबीर	Ę	77
ro—घार्स डैन	s-c	मं ध्रीर पुत्र
" <del> भ</del> ाइसे डेन	<b>5-1</b> 3	भी। देखी
<del></del> वस्तर्	{ <del>= - { e</del>	भीः वाः मीः राष्ट्
<del>-वदत्सुड</del>	१इ	भी० पतीदार
-मन्तरस्य महारेम	5 13	संश्रहेत
्डिमाञ्च भनाधी ।	हो	
	ي يستوي	र्ग सम्बद्ध
🧚 ್ಷ, ನರ್ಗಚಳ ಪ		••
ं ३० कसर हो €	a since f	**



# ञ्चात्मवोध (भाग दूसरा)

## अनुक्रमणिका ।

<del></del>		
विषय	इष्ठ	लेखक
१—श्रादर्शदान	8	चीर पुत्र
२ आदर्श पग	ź	"
३—पुणिया श्रावक	२–३	71
४अरग्क श्रावक	₹-8	77
५—प्रभव चोर	8	73
६माथा सँवारते महारा	જ જ	77
५ अमृत वचन	વ	"
८—गुरु वाणी	<b>્ર−</b> ફ	7)
५दी महावीर	Ę	"
१०श्रादर्श जैन	5-5	सं ॰ बीर पुत्र
११आदर्श जैन	<b>९–१३</b>	औ> वंसी
१२—वचनामृत	१२-१५	भी० वा० मो० शाह
१३—वचनामृत	१६	भी > पाढीवार
१४ घल्पारम्भ महारंभ	१७–२२	सं = बीरपुत्र
१५-हिंसाजन्य अपराधों की		
सजाएँ	ર્ષ્ટ-ર્ષ	े पीस <del>्त को</del> ड
१६भूँत के सपराध की मजाएँ २४-२५		, <del>**</del>
ं - बोरी के छाराध की स	ाता २५ <b>-</b> २६	



## श्रीत्रात्म-बोध

#### इसरा भाग

## धादर्श दान ।

गंगा नहीं जैसे मनाई से बहुने बाते हाथ । बायक ( मानने बाता ) थह ज य, घडरा जाय । घरन्यु विनीत भाव से बामंत्रण करता हो रहे । बुवेर के भरतार को घण भर में गाती कर है। बानर विश्वास जो ठहरा । हिमानय से तो नय २ भरते बहुने ही रहते हैं । में मैं सम न करूँ तो मेरी त्यामी गंगा बास फोली । इयर आह बीर ज्यर भी शह हो जाउँगा । लंगों के बस्माण के तिय दान नहीं करे । दान करे बारने सार्य के तिय !



खपनी खाय से समाज सेवा करूँ।

नित्य प्रवि एक स्वयमी को जिमाऊँ।

गृहलक्ष्मी की खनुमति लेकर उसे सहभागिनी बनाऊँ।

गृहलक्ष्मी की खनुमति लेकर उसे सहभागिनी बनाऊँ।

गृहलक्ष्मी की खनुमति लेकर उसे सहभागिनी बनाऊँ।

सरल तथा सरस एक च्याय है।

में तपश्चर्या करूँ।

ना, मुक्ते भी वो लाभ हेने दो।

खपन दोनों परावर दान करेँ।

नित्य एक बन्धुच बहिन को खाझ विद्या खादि कावश्यक दानदें
समाज सेवा करें जो खाला-सेवा है।

शास मुक्त होने को।

#### श्ररणक श्रावक

अपने खर्च से जिसकी इच्छा हो उसे ।
समुद्र यात्रा कराता है ।
मध्य समुद्र में जहाज पहुँचवा है ।
आकाश में अवानक गड़गड़ाहट
और विजनी पमकवी है ।
जहाज आकाश पावाल को मुँह करता है ।
सब जिन्दगी की आशा छोड़ देते हैं ।
इन्ह देव की आरायना सच्चे हृद्य से होवी है ।
देखवाणी होवी है ।
अराएक अपना धर्म होड़ों सो शानित हो ।



अमृत-चचन

जहां जरूरत हो वहीं बरकते हैं। अनमोज मोता गिरते हैं। कभी किसी को प्रहार माञ्चम नहीं पड़ता। सत्य, प्रिय रोपक और पाषक। विवेक पूर्वकविचार के स्वपरहिल्हारों वचन जैनी उचार एकरे।

#### गुरु-वाणी

गाय खोगातवी है। फेन के मांग से दृष बनावी है। बच्चे से दृढे बच को पिलावी है। मा के दुग्य पान के समान पथ्य बनवा है। धीरे २ रूपान्वर होडर दही खीर थी का रूप बने। सुद पुष्ट खीर संसार को पुष्ट बनावे।

X X X

जैन को तलवार दुधारी ।
जीवना जाने, साथ में हारने की भी चुक्ति जाने ।
मारना जाने, साथ में मार खाने की कला जाने ।
आंवने से भी कथिक वीक्स चुद्धि जीवे जाने में काम में लावे ।
जैन वलवार जैसा नेज ।
साथ ही कमल जैसा नरम ।
गिरिराज जैसा बड़ा ।
साथ ही काटु जैसा मुक्स ।
बजु जैसा क्टिन ।



दृसरा भाग

### आदर्श जैन

विरव के गिरिसाल जैसा है। बलेटी में शान्ति,

चोटी पर मुक्ति है । इन्द्रा को इमक्की नलवार समसता है ।

मोज्नार्गं या खेवर है।

इसफे दी पाँचों हैं ज्ञान कीर किया उनमें सील की पहुँच सकता है।

पाप का फल देखें विना पुरुष करता है।

भाष पर भाग पूर्व स्थार तुर्वय चरता है । लोक के १९ सल्लन चलत को सेंग्रस कर

मोच में भी मनुष्य जन्म को भेंहगा सममता है। दैन के दोनों बाजू प्रकाश है।

विषयी वे जागे और पीर्प दोनो कोर अंथकार है।

शान को मोछ को हुड़जी या स्कू समन्ते ।

दूसरे हैंट का खबाब प्रदर से देते हैं।

जैन शक्षार सन्मान से जराब देवा है।

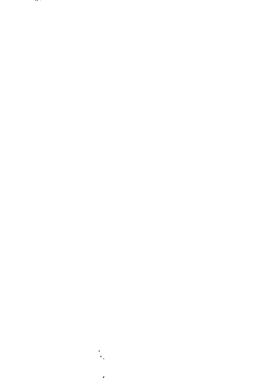
् दुल्यादि को दुरमन गर्ही परन्तु चतुभवः सिराने बारे दय-र्पा सुरु समगता है।

महुद्र की भयंतर लहरें जैन गिरियत को बोड़ नहीं सहती। सरका में गानिक का कामन सम्मान है।

वासना में शान्ति का सभाव सममदा है।

ं क्रथमें को कर्ममाला के सरका शुरू का विकास एका है। ŧο

श्राध्यात्मिष्ट जीवन का यह समुद्र है। मुख के उत्तर चंद्र की गहरी शीवजवा है। सूर्य जैसा वेजस्वी जगमगाइट हो । श्रांशों में वौरता का पानी कतक रहा हो। जीवन पर ब्रद्भवंदें का निशान फहरा रहा हो। चेहरे में अमृत मरा हो। जिसको पाँ-पी कर जनत विशेष व्यासा बने। मैत्रों, प्रमोद, कहला, चौर माध्यम्थ मावना को रेसा र लहरें लेवी हों। सुराजिता के मार से मने नम रही हों। जीम की मीठास से पत्थर भी पिपन जाय। जैन के जोदन में चडिंग धैयें चौर श्रक्षएड शानि हैं। स्नेहमय नेवों में से विश्वप्रेम की नदी वहें। जैन बोछे घोड़ा किन्तु बहुत मीठा । जैसे मुँइ में से अमृत निरा रहा हो। श्रोता बचनामृत का व्यासा बना ही रहे। मध्र वचन से सब बश होते। जैन गहरा ऊँडा है, रूभी द्वनहता नहीं है। जैन के पैर गिरे वहां करवारा छा जाय । शब्द गिरे वहा शान्ति झा जाय । जैन के सहवास से अजीव शांति मिलती है। जैन देम करता है, मोह को सममता ही नहीं है। जैन के दम्पबि धर्म में विज्ञाम की गंध नहीं है। जैन मदा जागृत है।



का और संप का उपदेश कायरन का वैसे संप्रशय, रिव 58 क्षेत्र का मोह छुटे विना मुनि का उपदेश निस्सार है।

२०--महली की घात पारघी से बड़ी महतियाँ " करती हैं। वैसे ऋत्य धर्मी से दलह प्रेमी साधु, और ब

जैन धर्म का आश नाश करते हैं। २१ - इस भव में भृतकाल की सेनी को लाट रहे हैं है

वर्तमान में भविण्य के नियं बीत को गहे हो। २२—नाटककार राजमुगट पहिनने से राज्य अधिकारी नहीं हैं। वैमें मुनियने का नाम धरने बाहे

२३—ईमाईयों ने भारत में धर्म प्रचार के निये-" मागी नहीं हैं। मुक्ति चीत नाम की सस्थाएँ, १८७७६ — वादरी धर्मग्रह, क्षॅस्टमं, ४०० सकाखान, ४३ हापातानं, ५० ह्यार कालेलें ६१० म्हल, १७९ उद्योगशालार, ४८०५४ दिनाई न्द्रप्यापक विचालय, श्रीमन जैतियों श्रापन श्रीपक

२५-जैस किन्दू और मुसनमाना ने आपम है निष क्या इद्ध किया है ? स्वराध्य मुमाया वैसे श्वेताच्या दिशस्यरा न मित्र है भिर

स्यात्र मापुकों ने सन्दर्शय के लिये खाल <sup>लेत</sup>ाम हो ठ २७ - जैसे कचहरी, कानून, स्रीत वर्शन शे शास सा बना रक्या है।

के लिए हुई, आज उनती हुं स्थाद अशानि श्रीर इसी रहे हैं बैस, सम्प्रदाय, कर, मर्यादा, श्रीर श्रावणाः हे निमित्त वन रहे हैं।

: ६--कोर्ट मनुष्य विकाश के लिये विध्न मृत है वैसे ही सन्प्र-दाय धर्म-थेम में विध्न मृत ।

२०--वर्षमान राज्ये और धर्म संगठन का शिर नीचे और पैर उने हैं। कल और नर्यादा जैसे मानूली विषय के उपर विशेष तज्ञ देते हैं। समक्ति और वासास्य मान क्या बतादि के लिये कुछ परवा भी नहीं करते हैं और वृषण को भूषण रूप समन रहे हैं।

२८—वामसी घमें उन्त सियाता है, वय साविक घमें गम गाना सियाता है और जैन घमें के श्राचाया में भी उन्नसिखाना सुरू किया है इसीसे घमें के मुगड़े हो रहे हैं।

२९—दिराई पानी चत्रित के शिक्षर पर चहने वाला होता है, तब बराल रूप से भरम होकर बादल रूप देह पारी पन कर मुसलपार चरसता है जैसे पुराने रोतिरिवाज नारा हाकर नमें जन्म पारण करते हैं। शिथिलाचारी पतियों के बाद गोंसाशाह का जन्म हुआ। खबनमें बीर की जल्मन आवस्यक्ता है।

२०-- कष्ट देनेवाले को कष्ट देवर सुरा होने का यह जड़ हमाना है तब पूर्व में क्मा देवर खुरा होने का जनाता था।

३१--- इष्ट देने वाले की कष्ट देने से अपने कष्ट में कभी होती वहाँ है, परन्तु सद्दा दुःसों की इद्वि होती है।

२२—वैर लेने से नुकसान निर्फ दो मनुष्यों को नहीं होता किन्नु ममल जगन् को नुकसान होता है। यह समक बाज के क्याने में प्रायः कसंभव सी है।

२२—धर्म मर्राज्ञयात है। न कि भरतियात। गुरुमकि गर्राज्ञयात नकि फर्राज्ञयात।

c

रे४---म्यामी श्रद्धानदणी की प्रतिज्ञा-गुरुकुत के होरे बहाँ तक पर से पैर न स्थाना । दे कोई जैन बेर रै

े २५-- रूसरे के दीय देखना यह खुद के दीय झर है। के समान है।

३६-मुद्धि यह भौधार स्वरूग है।

श्रीयुत अमृनलाल पाढीयार कृत

१— मन को इड़कवा, शरीर को सब, सुदि को हैं। गरदन को एटेंग की गाठ हाथ कौर पैर में लड़ने की काल के श्रीमंत्रों को लगी है।

र--पक रोटी का दुक्का स्थान बाला भी जगत मण भरणी है।

रे--लीजोती के त्याग करने वाल ने क्या अतिहि, और पुरू कपट के त्याग किये हैं?

४—कप्रभी चर्तुंदरी के उपवास वरने वाले ने विवाद, युद्ध-विवाद, वेजोड विवाद, कन्यावकय, वर विका सुगते में जीमने का लगा किया है ?

· ५५ — सबस्सरी से समाके साथ क्या मतीय की व की है ?

५६-- प्रमुख्तुति करनेवाना ने क्या विकथा निन्दा श विका है ?

### ञ्चल्प ञारम्भ व महा जानम

१—हाय में चनित लेने बाते को कौतमा करें ? की होग बाते को कीतमा करें ?

२—वेदनीय वर्ष बड़ा व मोहनीय इन

२--वेंद्रीय धर्म के सब के निये होयेज हमने हाज

४—वेदनीय से हरते हो उठने क्या मेहलंब व हल ह ५—रेशम पहने बाल दुग्यों या उत्तर कर का उन ६—पांटे पर सोने बाल हुग्यों या रेगम हो हा व उन्न श हरती १

्ष-स्थी में मीह करने दल तुन्न व हमा व ते बाला १

८—मोती का हार उहने बान करे हा वा का ९—मोती कैसे बनने हैं डॉर वर्ष हैं:

१८—हत सुंपने बान पाने साहत्या हुए । ११—बपने हाथ में सेने कह का कार साहत्य

समे दाण पार्प यो वही हे इस इन

देत ें का दोश्क जनांते हान

१४---शिव भी मार्ग के स्वयंक्र का कर गण या दब दिन बद्धानी वस्त्र अक्टर क



२९—सैवहों गार्वे पातने में भ्यादा पाप या एक धारवातारू - दही दूध यो त्यांने ने १

३०--- भरा भर मिठाई यवनापूर्वक बनाने में ध्यादा पाप या पाव भर मोल लाने में १

३१—क्यांव द्यार्जित लाग्यों को सम्पत्ति में ज्यादा पाप या

श्रन्याय वराजित एवं कीड़ी में १

२२—तालें वास्यित की पृष्टियां परिवने वाली को काँपक पार वा एक हाथी होत की पृष्टी पश्चिमे में १

६६—यर पर रसे हैं बनाहर शीमने वाला पानी वा सुक्खें में शीमने पाना ?

२४—मी दिवाह में पी जीतने दाल पाये वा एवं मोक्स्स में पी शांत्रे बाता है

६५---रामाई को भी पेपपर राप्ये तेने द्याना पार्य या. देही को पेपदर राप्ये तेने पाना १

६६-- ही बेटी की न पहाने याता मुर्खे बा कर पेंटे की ?

६३ –भयंकर योगार्ग में मंत्रात की रहा। वहीं परने वाता यह या सन्तात को विद्या न() देते याणा है

२८—रेडी की लाग रुपये की दक्षिण देरेगा। ब्हम कि शिला देनेशल क्षम ?

१५—महुत रा मन साबे यात मन्त्रयों कि एउनम या सन्त्रापिक्य गम में जोमते बाग १

्र ५०--वंशम ने चंगेरेन इंग्ले दशा सरी कि दशामा राने वाग है प्राप्ति होती हैं।

े ४१—पुत्र को कर्जदार बनाने वाला पापी कि रखने वाला १

े - ४२-संतान को विलासी व विषयी यनाने वाले

वहर ऐते हैं। ४३---धर्म रत्ता के हेतु धर्म कलह करनेवाने धर्म इन

जब काटने वाले हैं। (आज ऐसे दोषो बहुत हैं का र्या ४४—सब दुःख और पापों का मूल कारण कहात हैं। ४५—सुरोदय से सब अध्यकार दूर होता है नहीं। संख्यतान से सब दोष और दुःश दर होकर सकत

#### उपसंहार

शास वयनों के सममने के तिए सद्गुत को दों -जारत सताई गई है। शान इसका पालन थोंका होते हैं के निर्णय में श्वत्यकार हा। गात है। तीन जनता पर्वत्र स्वयक्त स्वत्र पात को चुरा मानती है, परन्तु परी जा भाष, मूल रही है। जैसे खारश जीव लाने बाती लगी स्वर जान ह्यार को दुःख का कारण मानता है, कि जब विवेकी मनुष्य सके असली कारणों को दृष्टता है और उससे वचता है।

जैनों का ध्येय जीवदया होते हुए मी हिन्सा घट रही है, जो मेही विवेक टिप्ट लगाक्द विचार करेंगे तो जनेक दोप स्पष्ट मारुम पड़ जायेंगे। शासकारों ने हिन्सा के २७ प्रकार वहे हैं। मन, बचन, काया से पाप करना, कराना व अनुमोदन करना; मृत, वर्तमान जीर भविष्य काल इन २७ प्रकारों से हिन्सा का पूर्ण त्याग यह जहिन्सा है।

हेखों! श्री त्यामक इसांग मृत्र में सप शावकों ने केवल सुत के हो सम रक्ये हैं। घर का पर और केवल एक लाति की घर में बनी हुई मिटाई रक्यों है। नाम गोल घर लीवन सर के तिए केवल हो घार शाफ रक्ये हैं। अब सुनियों को हेल्ले. सक होटे पड़े बान निल हाथों से ही परने की आला है किस्ते के कराते की सर्वाई क्यों है ? कारण हाथों से, दिरेड के कारण कर होता है व स्वावलक्षीयन रहता है। बाल नर्वाई की कारणांक खबिबेकी सीकरों से काम लेने में हजारों हुन। याण कर कर हाई

मोत थी थीड लेकर जो दान देते ही की कर्म कर्म के हाथ पाप पर ने में मथदूत होते हैं। एक क्यान्य का तक है कि "एक हरीबा बटन के बच्च कर्मी की के कर्म बात कराइयों के हाथ मथदूत करते हैं कि "एक हरीबा बटन के बच्च कर्म हैं कि बच्च कर्म हैं कि बच्च कर्म हैं कि बच्च कर है कि बच्च कि बच्च कर है कि बच्च



१-- जैसे मनुष्य के शर्गर का पाव भरता है वैसे ही कोशी । हुई साने छापने बार भर जाती हैं। र--- जैसे मनुष्य के पाँव पा तजा विमता भीर बद्वा है पैसे

ही चर्मान ( पृथ्यो ) भी रोजाना विसवी और बहुती है। ३--- जिस तरह बालक बहता है दैसे पर्वत भी धीरे-थीरे बहते

मादम होने हैं।

४--तोह चुंबक लोह की ग्वींचता है। यह बात उसकी र्भेतन्य राक्ति को प्रवट करता है। सनुष्य को तो लोह को तेने के ितिए उसके पास जाना पहता है जब कि लोह चुम्यक तो लोह को व्यापमे व्याप गर्निव हेता है।

५-प्या दा रांग हा जाता है तो यताया जाता है कि - मुत्राराय में सचेत कंकर बहुता है।

६-मन्द्री के पेट में रहा हुआ मोती भी एक प्रकार का . पादर होता है सौर पह भी बहुता है।

 मनुष्य के शरीर में हड़ी होती है लेकिन उसमें जीव होता है जभी प्रशार पत्यर में भी होता है।

मुमति—ज्ञानीनित्र पृथ्वी काय में जीव है, यह मादित बरने के लिए आपने दर्व बाहुमान में ठीव प्रमाण बताए। बाद

अप-शय में किए रोई प्रमास बजने की कृपा करें। सरंत - प्रिय मित्र मुन । ध्यप ( पानी ) काय जीद की सिद्धि

में डिए ये प्रमास हैं ६—किस साह चंदी से रहे हुए इसकी पहार्य से पन्नेतिहर पण का चिरद होता है दैने ही प्रवाही पानी भी जीवी का चिरद

**877** 



### छ काय (भाग ३)

मुनि—सानी यन्छु ! कृष्यी और अपकाय में जीव हैं, पर बाव आपने ऐसी सरल रीति से समन्ता दी है कि यह मेरे दिल में बहुत जन्दी उत्तर गई, परन्तु भाई ! मुक्ते मान करना, अनि से ही अपन लोग जल मरते हैं ऐसे स्थान में जीव कैसे हो सकते हैं ? मगर ऐसा है तो तेज्ञाय में जीवों की सिद्धि करके बताने की हम करें।

जरंब—हो भाई ! इस में शंका की कोई बाव नहीं । अग्नि भी फिर जीवों का पिएड हैं । अग्नि श्वासीश्वास दिना नहीं जी मुक्ता, उसके कारण सुनः—

र-जैसे पुसार में गर्म हुए शरीर में जीव रह महता है में हो गर्म जाग में भी जीव रह सबते हैं।

रे जैसे मृत्यु होने पर प्राणी का शरीर ठंडा पड़ जाता है में ही ऋषिन युम्हने से (बोबों के मरने से ) टंडी पड़ हों है।

्रे—जैसे चातिए के दारीर में प्रकाश है वैसे ही चिन्न काय जीवों में प्रकाश होता है।

४—जैसे मनुष्य पलना है वैसे श्रामि मी पतनी है (श्राम ज पर श्रामे दक्ती है)।

५—६ जैसे प्राणी सात्र हवा से खोते हैं पैसे ही करि

<sup>े</sup> भारते हुए एकड़े पहि मुख्य टक हिर जार्य तो हुए कर की जारे हैं और उपादे हों और ह्या मिलती रहे तो हुए समय तक भीत रह सकते हैं, भल्यू भी भीत के जीव माने पर राग ही ज

भी इवामे जीवी दै (विना इवाके जलती हुई भग

38

दीपक सुम जाना है।)

६—असे मनुष्य आक्सिजन (प्राण बायु) कार्यन (विष वायु) बाहिर निकालता है वैसे ही भी अविसजन लेकर कार्यन बाहिर निकालती है।

७--कोई जोव व्यन्ति की सुराक लेकर जीते **हैं** भरतपुर के पास एक गाँउ में एक वल दा धास के दर्ज स्थाता है।

मारवाइ के रेगिस्तान में दिना पानी सब्न गर्नी वें ग चुहे जीते हैं।

चूने की भट्टी के चूहे कांग्र हो में जीते हैं। फिनिंड . को भी ऋग्ति में पड़ने से नवजीवन मिलता है। कान, मादि युक्त मीप्म श्रद्धतुमे ) सस्त तार में ही फलते पूर्वी

जिस प्रकार दूसरे जीव गर्मी के बडने पर तथा गर्नी सकते हैं उसी पकार अग्नि काय के जीव अग्नि में रह सही।

सुमति—ठीक है भाई। अब वायुकाय में जीव हैं सिद्धि कृपा कर बतानी चाडिये।

जयंत—-वाउद्याय (इवापवन) भी जीवों <sup>का</sup>ै है और यह बात प्रत्यत्त सिद्ध है।

१—हवा इजारों कोस घल सकती है और वह ( इवाई जहाज-विमान ) को चलने की गात दे सकती है।

र—हवा दशों दिशाओं में स्वतन्न वेग से वीच भीर बड़े बुझ, महलातों को उखाद गिरा सकती है।

ं ३—- इवा च्यपनाक पार्नेट से चवा चीत चरे से सौटा कर वकी है।

सकी है।

Y—स्या में प्रापेद काल में सामन्य उन्ने हुए जीव हैं,

रे विशास में मिट सर दिया है। मुद्दे से स्वयं भाग जितनी
जा में कारते जीव बैट सबने हैं। जाई बेदसम बहते हैं।

गामन में सो पिटले बातुसाय में जीव बनाव है सीर उन जीवी
हैं इस प्राप्त हों से जिल साधु लीत हुँह पर हुँहपनि स्वयं हैं

भीर इस प्रपाद बातुसाय सी रूपण करने हैं। भावसों से लिए
मी सामायिस, सेपण साहि धार्मिस क्रिया बरने गमय स्था
भी प्रश्ना साधुकों से साथ बात पीट बरने बरत मान भी हुँहपित

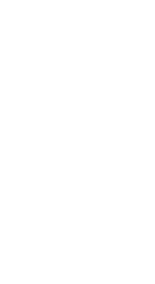
### छ काय (भाग ४)

मुनिति—प्रेमी पन्तु ! ऋषित व्यार हात परके हुण्यों, जल, व्यान कौर बायु बाय में रहे हुए जीवों की सिद्धि कर दिखाई ! व्यर हुए। व्यव निस्तित में रहे हुए जीवों की सिद्धि वर बतावें जीवें में पार्ट के विकास की सिद्धि वर बतावें

नी में सामारी होडेंगा।

रियंत—सान प्रेमी भाई, कृत्यों चादि स्थावर जीवों जादि है सम्पन्य की सार्ग दलीनें चाप समम्म गए हैं तो बनस्पति के रियों की सिद्धि सममने में देर नहीं तगेगी, क्यों कि खाज विद्यान में नियुक्त सर जगरीशचंद्र योस जैसों ने चनेक समार्षे कर के यह खाम शीर पर सिद्ध कर दिया है कि बनस्पति भी जीवों का निक्ष है।

सुन-१-मनुष्य जिस तरह माता के गर्भ में पैदा होता है



१-पद्मानी वसर बहुता हे हुए। स्टीएकी सुर्वे हे फ़्ती में सिनी हवा चार होने दा बंध हो। है।

रि-सार्थ प्रतिभवा क्षेत्र व क्षम क्षेत्र से सिह का सार है कि ---

ेदनमधी सुम्हराय है होता स्वता साहिता है। भवनित्रमा चौरण भी से एस हाता है "लगाए छादिया । एते ही सन्धित हीते हैं।

"मृत में रात्तर और दशा में हम हकर जीते हैं" ऐसे षणको में विकास से सिद्ध करण है कि वसर्गत कराव से सीव है।

यम बाय में हो, संज्ञायर शर बांव हर्दिय वाले छीजों षा मन्दित होता है। इसने लॉब है यन विश्वविगयात है।

र्णीरे, एक एरेंदर, राय रीप को दो इन्द्रियों जुर्हीय <sup>करि</sup>ः म**रो**ही को तीन, ग्रह्मी, मरत्य, बिर्ग् , क्षापि को , **पर** <sup>ह्या</sup> मनुष्य, पर्श, पश्चिमें को पांच दक्तियों होता हैं।

## उपवास खोर ध्यमेरियन डॉक्टर्स

### ( प्रशास चिक्तिसा में से )

(१) पेट पूर्ण होने में भोजन में स्वयं धरिय होती है, फिर भी भराती होत साधार घटनी स्वीर मसाला के निमित्त से स्वादा भीतन बगढ़े दाट तनाते हैं। यह विव समान हानि करता है।

(२) शरीर मृद्र गराव बानुरो स्थान नहीं देता है,मल सूच मेडा पर्याना चादि को छापल होते ही फेंक देवा है।

श्रीचात्म-दोघ

(३) वारी बारणे, बंध करके सोने के बाद बारी खोजने है रारदी लगती है किन्तु हवा में सोने से शरदी नहीं लगती है। ज्यादा भोजन करने से मन सडने से दिमाग में दर्द व श<sup>नेवर</sup> आदि होते हैं। (४) शरीर के लिये इवा, बहुत की मती पहार्य है इवा से

शरीर को कभी सुक्रमान नहीं होता है। (५) शरीर में अन्न जनादि के सिवाय सर्व बन्तु विष काम करती हैं।

(६) शरीर अपने भीवर रात्रि दिन मा<u>ड</u> देकर रोंग <sup>ही</sup> वादिर निकातता है।

(७) उपवास (लंबन) करने से जटशक्ति रोग को स्त करता है।

(<) युस्तार आने के पहिले मुखार की दवा छेना यह निर्

लने विष को शरीर में बढ़ाने के समान है। (९) ऐमा एक भी रोग नहीं है जो उपवास (लंबन)

न सिट सके। (१०) स्वामाधिक मृत्यु से दवाई से भ्यादा मृषु दोती <sup>है</sup>

( ११ ) एक दबाई शरीर में नये बीस रोग देश बरती हैं।

(१२) श्रनुभेवी।हाक्टरों को दबाई का विधाम वहीं है।

(१३) विना अनुभव वाले डाक्टर दवाई का वि<sup>सूत</sup>, ब्दरंत है।

(१४) दुनिया को निरोगी बनाने का बड़े वह डाइटाँ हैं। पक रतात बुडा है। बहुयह है कि स्वाइओं को जमीन में मार्ड

36





75

(३३) शरीर में विष शाल्य मधी बीच हो सबता है।

हरार साम

(३४) हराद रेंगे में सेम भीता सा राजा है किन्तु जर-म में भेत छड़ मृत् से नह होकर चाराम होता है।

ं (३५) द्वारास बरने वर्त होता दो हुँह में स्वीर कीम बर रम रूट का चलुमद होने तद रोग का नष्ट होना स्मान पारिए ।

(१६) मधीर में की मेंग बार्च परना है बढ़ी पाम दबाई खें है :

(३४) प्रमुक्षणे हालार बहुते हैं हि इसरें से रोगी रक विवादे हैं।

(१८) दबाई न देती यह सेगी पर महात उपनार हरने मनान है। बेबत कुएरती पध्य ह्बा-भावना व्यादि परम

रगारक हैं। ं <sup>(६९</sup>) व्यीन्त्यो हाइटर्न बहुत है ह्योन्यों रोग कीर रोगी

ते क्ले हैं।

( ४० ) रापटर पट लायें तो रोग और रोगी भी पट लायें । (११) रेगो दे देह में सह न शहने से रोग विचारा

न ही सर्व नह ही जाता है।

(४२) दवाई को निक्रमी समन्दे वहीं सन्या टास्टर है।

( १३ ) हाय, पैर खोंत को काराम देते हो बैसे उपवास का पर कहरनेट की खाराम देना है।

( ४४ ) धर्मेरिका में टाक्टर लोग रोगी को व्यवास कराके

श्रीद्यात्म-बोध

रात्रि को देखते रहते हैं कि शायद यह गुन की खान ले। (४५) तीन दिन के बाद उपवास में कठिनाई

४२

नहीं पड़ती है । ( ४६ ) ट्टो इड्डो का जुड़ना और वन्दूक की गोती शे

का भी उपवास से खाराम पहुँचता है।

( ४० ) पद्य पत्ती भी रोगी दोने के बाद तुरत कारान

न हो वहाँ तक खाना पीना छोड़ देते हैं। (४८) कक, पित्त स्त्रीर बायु में बधघट होने से

होता है। ( ४९ ) वायु का सात दिन में, पित्त का दश दिन में,

कारोग बारह दिन में अपन्न न लेने से (उपवास करने से जाराम होता है और रोग नाश हो जाता है।

( ५० ) दवाई से थककर द्यमेरिकन डॉक्टरॉ ने <sup>दावास</sup>

अनादि सिद्ध दवाई द्युरू की है। ( ५१ ) जो दवाई नहीं करता है वह मत्र रोगियों 🖟

ससी है ।

(५२) भूख न लगना रोग नहीं है किन्तु जठगाँप्र नोटिस है कि पेट में माल भरा हुआ है। नये माल है स्थान नहीं है। एकाध उपवास कीजिएगा।

( ५३ ) छपवास करने से शरीर दुखता है, वकर आते है मुँह का स्वाद बिगड़ता है। इसका प्रयोजन यह है कि शरीर ब

रोग निकल रहा है।

(९४) एको कारीने कार्यन होते की जनगम से जिल्ला है।

(१८१) करमों में लेज जाताम से ले क्षेत्र मह होता है यही मीत्र के कातु में की तपहास के तथ होता है

## मनुष्यत प्रकट काने की शिका

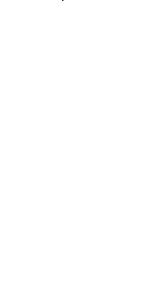
(१) मरोबों से कारा काश तेकर धर्म क्यान करने बाते रेरिट्रेय की दिसा करके क्याबर शिक्षे को क्या शास्त्रे बाते के क्याब है। ऐसे धन से ऐसा काशास करने बाते व्येपिट्रय के स्मृत की रोक्स कार्यट मानने कार्ति सम्मान है

म्दर बने बंद, होई स हाई ही।

पर्दे भी होते. बहु हमते नेतृ विकास

- े १९) पर पर राय सरते हे कारण में दाना चीर यादाहर पित्रों में सामा यह स्थाप हे जारण में दरहर देखा रामन पित्रे समाप्त है।
- (१) धेमडी काम बस बाजा की महान का उपयोग करने "मिहाबीड "कमें बंबते क्योरि ऐसी बस्तु में तीम कामिक ऐसे हैं, कीर हिमी कामा के सुपात को उपन देते हुए भी हाम ऐसे हैं।
- (४) की के देंग की जुनी सानने कर नुस्तात उसा मिने हुका ?

<sup>ं)</sup> भंगी तीय (कि उससे ईसा इस हैकर छपसल कि रूकत्



- (३४) क्या कोर्ग को पृथ, उठी, यो विक्रमी भी क्या सोकोर
- (१८) मोशने के शाला रे लागने झान का नार क्या है। या पर्क कास पान समुद्धिय शतुम की नहीं मर रहे हैं। पर े के देश की झानत के हैंदियों की दशाकों भी कभी लितासीये? के दिशा की झानत के हिंदियों की श्राप्त करके न्याय नीति कि साथ, शील, गुरूपार्थ कीर समस्य में सेग्न अल हैयार करने कि साथ, शील, गुरूपार्थ कीर समस्य में सेग्न आत होता हो कि साथ के में साथ करों करांग के समस्य होते हों से साथ होता हो है में साथों ऐस्ट में कीर की देखा, का स्वांग कीत (भन हन
- ति ) सह कार्येने ( नष्ट क्षेत्र प्राप्ति । क्षीत शुद्ध व तत्तम क्षेत्र । कींड क्षी क्षेत्रेक्षेत्रेने की क्षाप्त (तत्त्व कित्या । ( १८ ) कित्यान्त्री कवार्ये ऐसे क्षी कित्योने सार्य पूँजी पि प्रकार में देवल जिल्हाी सेवा साब से के दी है, जैस कावक कोंने ऐसे केति केत
- (१२) रोज परिवर की पाप का गुण करता हुन्य कहाते कि रोज परलोक में भग, पिला, शोक कीर त्याहुत्तरा करते याना पिला करते हो (लगा कह सबे टटय की भावता
- है बरने याना चित्रम करते हैं। त्या वह सबे टड्य की भावना कि हैंने समाज दलनें गिरी हुई रह सक्ती हैं
- (११) भोद लेने का सांह इसी जन्म में क्षतेक हुन्य का जिए मगद कीय नहा है किए भी मिल्या कड़ी, लीट लजा व <sup>बहान</sup> बरा कह उड़ा कर सम्य पन कीये को देते हैं। उसा आप ज्यापि से सर्वना काला। नहीं सानते रे यदि उत्तम है तो ज्यान किए लेने का स्थाप कर लेने कीर सोद काकर कनर्य कारी कड़ी के सहद न देने के कुल्ह से पूर्ण

आदर्श जैन ( चाल् ) [आर्थिता मोर्शाही भय को भगाने वह जैन । लाजसान्त्रों को भग्भ करें निज की धारमा का गुरू सी जैन । माखिक स्थाभिमानी मो जैन ।

जगम् को असम्र करने को जैन नहीं भटकमा । खुशामद करे वह जैन नहीं। रूप नहीं, किन्तु गुण को को मी जैता। वचनामृत्र ।

जीयन के रहस्य की समन्ते उसे स्वर्ग । जी जीवन रहर समके उमे नरक। बुद्धि और इदय की शिलित बनावे वह इच्छाओं के आधीन हो वह नारकी। यन का सोह हि गदा उतना नजरीक नरक। धन का मोह जिल्ला कम उतना मार नाउँक श्चारम ध्यान जितना विशेष उननी नाम निश्चट सन. दचन काया के दोयों को उंडो । उनके किए अन्तक पञ्चाताप करो । फिर से डेप्प स हो उसके "" सप्तकास र **रुद्ध रही परन्तु भवते का पागणपन** डावी भवकेदार व्यक्ति श्रीमें की बार न रूप्तामणी है भवदेशार व्यक्ति तद पुत्र के तुम्य के साइगी हो अमृन्य भाग है अधिक स्वाद में आंग्रह टाउँत रे

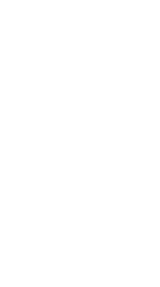
साद्यभोजन अनु का मायाने मा = अरवकरणा थोड़े में बचाकों और इन कर दश के लिए प्राप्तस्य करने बार्श संस् प्रापद्धण का सामीसकण महिला र कर

# काव्य विलास

## श्री परमात्म छत्तीसी

दोहे

व परमातमा, परम ज्योति जगदीस । एम भाव इर आन के, प्रणमत हं निमशीन ॥१॥ क ज्यों चेतन इच्च हैं, जिनके तीन प्रकार। पिंहरातम अन्तर तथा. पर्मातम पद सार ॥२॥ गहिरानम इसको कहे. लाव न आत्म खरूप। क्ष रहे परद्रव्य में. मिथ्यावंत अनुपाशा निर-आनम जीव सो. सम्पग्दछी होय। रोपे अरु पनि वारवें. गुण्थानक को मोप ॥४॥ रमानम पर ब्रह्मको. प्रकट्यो गुद्ध स्वभाव । किलोक प्रमान सय, भलके जिनमें आय ॥शा हिरानमा स्वभाव तज, इतरानमा होय। (मातम पद भजत हैं, परमातम हैं सोय ॥६॥ (मातम सो आतमा, और न हुजो कोय। मातम को ध्यावने, यह परमानम होय॥।।। माता स्म है परम ज्योति जगदीरा। क्रियं,ज्योति अलख सोह ईशाःचा



## श मन विजय के दोहे श

दर्शेन ज्ञान चारित्र जिहं. सुन्व अनंत प्रतिभास । पंदन हो। उन देव को, मन धर परम हुलास ॥१॥ मन में घंदन कीजिये, मनसे धरिये ध्यान। मन से आत्मा नन्त्र को, लिखिये सिद्ध समान ॥२॥ मन खोजन है ब्रह्म को, मन मय करे विचार। मन यिन आत्मा नन्य या. फौन फरे निरधार ॥३% मन मम चौजी जगन में, और इसरो कीन ? मोज ग्रह शियनाथ को, वह सुम्यन को भीहा है जो मन मुलरे आपको नो स्केसय *स्*रांच को उनर्द संसार को. में। सप सुक्ते कोह अ सत असत्य अनुभव उभव, सनवे, चार हरू दीय कुर्व संसार की. दी पहुँचन्दे 🚗 🕾 जो मन लागे प्राप्त को, नो सुख होता प्राप्त जो भरके धम भाष में. सो हुन हर हरू मन से पर्ला न वृत्तरों, देन्हों 😤 🚃 तीन लोग में मितन हैं। उस्त ह रूप 🚐 मन दासों था दास है. हर का हा सन सब बालिन्सिय है. इन्हें हर्ने हर मन राजा की मैंन एक होना है जिल्हा राम दिनों देशन किं. 🖈 🚞 🚃



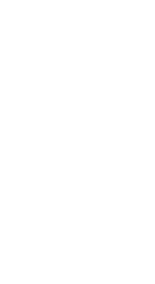
हैन्दर सोही आनमा, जानि एक है नंत । हमें रहित हैम्दर भये, कर्म महिन जगजंत ॥१९॥ जो गुए आनम हत्य के, सो गुए आनम माहिं। इक्के जहमें जानिये, यामें तो अम नाहिं॥१६॥ हर्यन भादि अनेन गुए, जीव घरें तीन काल। वर्षादिक पुद्रगल घरें, प्रकट दोनों की चाल ॥१९॥ मत्यार्थ पथ छोड़ के, लगे स्पा की ओर। में पुरुष संसार में, हर्त्य भव को छोर ॥१म॥ मेंथा ईस्टर जो लखे, सो जिय ईस्टर मोय। यो देख्यो सर्वज्ञने, यामें फेर म कोच॥१६॥

## कर्ता झकर्ता के दोहे

कर्मन को कर्ना नहीं. घरना शृह सुभाय !
ना ईश्वर के चरन को चंद् शीस नमाय ॥१॥
जो ईश्वर करना कहें भुक्ता किएये कोन ?
जो करना सो भोगता. यही न्यापको भीन ॥२॥
होनों दोष से रहित है, ईश्वर नाको नाम !
भन वन शीस नवाय के कर्छ नाहि परिणाम ॥३॥
कर्मन को कर्ना है वह जिसको झान न होय !
हेश्वर झान समृह है, किम कर्ना है सोय ॥॥
होनवंन झानहिं करें, सुझानी अन









काट्य विज्ञास रोगादिक पीडित रहे, महा कष्ट जो होय।

तय ह मुरम्य जीय यह, धर्म न चिन्न कीय ॥६१॥

मरन समय विललान है, कोई न लेय यचाय। जाने ज्यों त्यों जीजिये, जोर न कहु घसाय ।९२।

किर नर भव मिलियो नहीं, किये हु कोटि उपाप। 🐬

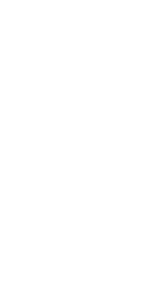
ताने येगहि चेन हु, अही जगत के राय । दशे।

भेषा की यह बीननी, चेनन चित्रहि विचार ! ज्ञान दर्श चारित्र में, आपो लेहु निहार ॥२४॥

#### प्रशास्त्र ।

रेंद्र की श्रतिहरूल विकासी, इदस्यात सूर्यय पूर्व की मोगासी र कि बहुत हुर कृष्ण्य, तेथाल सर बतम बत्यपु ॥६॥ द्यमें तथ हुए करकारी, करहारात कराहु रा बोर्ड नाहीं। कारदीय कार्य दिवस में केंद्र के कार्य समार असार असार दिन निर्मेष में उसके ध्यान ध्येष संभावी सवसन । म ए कम प्रमुख बचार, से सिरमात स्थारम जान गरेग र्गिर मायना ग्रोटी साव, बेंद्र "सामाच विजुषन सापनान । धिर एएस् क्षिये सीव, रहित प्रमा जान पर्यं व ॥४॥ म असार पुरुष हरी राज्य, पर पारा है पात बारासा । काहर करें कातरन करें, सदर हान दिराव विवारे ॥५॥ रिकेट हेंस केंद्र किहाँ होया, दिखेंस द्वारण विधि सप लीय । दर्म मण्डचेयर हरा मन्द्र, द्वय द्यमाद ने मीर व्यनुत्र ११६॥ रें पार्ति समनारिक हैये, का पर साथ ज्ञान कर होये। राहित सामगुह्य हेर्, लाही अधिक महासुध कर १८४। पम क्रेप किल्ला हम राय, निल्ला हम हु स हेत खदाय । धान दिन दिना सुविदेश, साम विद्यार छहना अनिवेश ॥८॥ एम्प माध्य चतुः ब्रहादं, सूरस्य तिते दस्य बहाते । मार्ग अवत सम बद पार, ते लोभी ते रच कहावे ॥९॥ ित रहेत रागी सुरूपन्त, हे भर सहत मंबोद्धि सन्त । हैं भी हरा समझ नहीं रहीं, सन इन्द्रिय जीते से जाती ॥६०॥ म्बन्तः रम साहर सी सम्त, हजन मानते पुरुष महते । रि केंद्र से बंद्रप बारे, बायर बान कारन शिर घारे ॥११॥

3.5

























## मेरी भावना

( जीवन सुधार नित्य पाठ ) जिसने रागद्वेपकामादिक जीते, सब जग जान जिया, सब जीवों को मोक्त मार्ग का निस्प्रह हो उपदेश दिया। युद्ध, बीर, जिन, हरि, हर प्रद्या, या उसकी स्वाबीन कही, भक्ति-भाव से भेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रही ॥ विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं, निज-परके हित-साधनमें जो, निशतिन तत्पर रहते हैं। स्थार्थत्याग की कठिन सपस्या, विना स्वेद जो करते हैं, रुमें ज्ञानी साधु जगत के दुख समृद्द को हरते हैं ॥ः रह मदा सस्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का निन्य रहे, उन हो जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे। नहीं मताऊँ किसी जीव की मूठ कभी नहिं वहा करें. पर थन वनित क परन लुमाई, संतीपामृत विया कर्रे॥ अन्तरार का भाव न रक्त्यूँ, नहीं किसी पर मोध करें. देख दूसरों की बढ़ती की, कभी न रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य यन जहां तक इस जीवन में स्वीरों मैत्रीभाव जगत में मेरा सप दीन दुर्खा जीवों पर मेरे घर से दुर्जन-कृर-कुमार्गरतों पर शीभ माम्यभाव रक्त्यूँ में उन पर ऐसी

#िद्यां-''वरिना'' की जगह 'भना







है। सनुष्पमय पाजाता यक बात है और मनुष्पक मात करलेगा दूसरी बात है। जाती हुई दुनियां में मनुष्प तो करीय रेड कर्ष हैं परंतु मनुष्पत्यवाले मनुष्पां को गिननी जगर की जाय तो वह केमुलियां यर की जा सकेगी। शर्म-लिये शाल में मनुष्पत्रव की दुलंगता की क्येग्रा मनुष्पत्व की दुलंगता का करात किया है। यह बात बड़े मार्क की है। ज

लिये शाहत में मनुष्यमंत्र की दुसंप्रता की क्योदा मनुष्यमंत्र की दुर्वमंता का कथात किया है। यह बात बड़े मार्क की दै। क्या बात बड़े मार्क की दै। क्या बात है है। की की दे मनुष्यमंत्र वाजोते पर भी क्यार मनुष्यस्त्र मात न दिया तो मनुष्यज्ञायन किस काम का? परंतु यहाँ पर प्रक्र यह है कि मनुष्यन्त क्यारोटर है क्या ? जिस्त न पाने पर मनुष्य- क्यारोटर की क्या ? जिस्त न पाने पर मनुष्य- क्यारोटर की क्या ? जिस्त न पाने पर मनुष्य- क्यारोटर की क्या ? जिस्त न पाने पर मनुष्य- क्यारोटर की क्या है। जिस्त न पाने पर मनुष्य-

मनुष्यमव मिलने पर मनुष्य का बाकार मिनता है परेन मनुष्यत के लिये बाकार थी नहीं किन्तु गुर्जी की बावर्ष-कता है। पक कवि का कहना है कि जय तक मुख्या के मीतर मनुष्य थी गणना न हो तब तक उसवी माता पुष्यती ही नहीं है।

'ग्राणिण्यापात्रसंसे न पतित कटिनी हुसंस्थापदश । तथाप्रधा यदि शुतिनी यद चन्द्रा कीटरी नाम ॥ १ ॥ स्थात पुत्री सोगों की पिनती करते समय सिसके नाथ पर भंगुली न एक्की गई स्थान् जिसका नाम न विका स्था दस पुत्र से काम कोई माता पुत्रवती कहतांचे तो कदिये नण्या किसे करेंद्री ! ताता पुत्रवती कहतांचे

इससे साफ मानूम होता है कि क्षेत्र मुखें को पारह करनेवासा ही मनुष्य है। बाकी वो मनुष्य नहीं किन्तु मडे: ब्यादार प्राफी हैं। नतुष्य राज्य का एक कर्य पर भी किया जाता है कि
निज्य की संतान है वह महुष्य है। यदाये नजु की संतान सभी
दें लेकिन महु की संतान होने का गीएव कारण करने वाले
थोंद्र हैं। सकी संतान तो वही है जो का ते.पूर्व पुरुषों का गीएव
थारण कर सके। महु उन्हें कहते हैं जो कुन तिर्मीच बरते हैं।
कर्यात् समाज की गिरी हुई शातत को उठा कर पुमालत
व्यक्तिय कर देते हैं। दैन-राम्बों में महुबों का (इस वर्षों का)
जो उहेन भित्र हो है जा से साज मानून हो जा है कि उनने
पुण। वर्ममूमि) की काहि में समाज की आवश्यकता
थाँ की पूर्ण करना की समाज में सुमालत उनस्थित करना है
वह महुष्य है, यही महु की सबी सम्लान है।

यद पे प्रत्येक महार में इतती हालि या येत्यता नहीं हो सकती: किर मी प्रत्येक महाप मह की सेतान दोने के गौरव की एका कर सकता है। यह बादर व नहीं है कि दक ही महाप दुवान्तर दातीव कर दे। दानरत सरीते सावारण कार्य को मी पक ही कार्यवर नहीं दता पाता किर दुवान्तर दातिवत करना तो पहीं पात है। ही हतता हो सकता है कि हम उत्तये तिथे हुद मी कर दुवरें। भारर हम पक हैंट भी दमा सबे तो भी कार्यकरी कहतारीने। मह बा कार्य कर सकते। पहीं तो महुपत्व है।

्रह रूस्त इति मनुष्यत का विकेश का हत्यें में करता है—

बाह्यसेन्द्रानदर्नेषुर्वे च । सामान्तरेकारहर्निर्वेषणम् ॥ धर्मो क्षित्रेकारिको विशेषे । धर्मेषु शैना पहासि समातः ॥

श्रयीत् शाहार, निदा, मय और मैसुन इन चार्से बानों में तो मनुष्य प्रमु के समान है। है । मनुष्य में बार कोई विगे यना है सो धर्म की है। जिल मनुष्य में धर्म नहीं है बह पशु के समात है।

मनलय यह है कि इस कवि ने मनुष्यत्व का चिद्र रस्त्रा है धर्म, जो मनुष्य नर्म को धारण कर सका बड़ी सबा मनुष्य है। धर्म काथियय बहुत गहरा और विस्तीर्थ है। उसके अपर तो कर्र स्यांत्र लेख लिखे जा सकते हैं इसलिये पर्ने के विवय में हर यदां अधिक कुछ न कहेंगे। परन्तु इतना तो कहनाही पड़ेगा कि धर्म का मूल सचाई है। 'सवाई' का संस्कृत पर्भाषवाची शन्द है 'सम्परूच'। सम्परूच से हैं। मनुष्यन्य है कीर भिष्यात्व से ही पशुत्व है, एक कवि ने सम्बक्त और सिन्यान्य की महिमा को थोड़े में ही बता दिया है-

नरत्येषि पग्रयन्ते मिध्यात्यग्रस्तवेतसः । पश्रत्येशीय नरायस्ये सम्यक्त्यायक्क चेतनाः ।।

श्चर्यान् जिनका चिल मिथ्यात्व से द्वित द्वीगया है वे मनुष्य हो कर भी पशु हैं बार जिनका बाल्मा सम्यस्त्व से निर्मल दीनया है, ये पग्न देशकर भी मनुष्य हैं। इससे साफ्र मालूम दोना दे कि मनुष्यत्व का देका सिर्फ मनुष्यों की ही

प्राप्त नहीं है। और मनुष्य दोने में दी मनुष्य न प्राप्त नहीं ही जाना। पशुक्रां म भी पेने पशु होते हैं जिन्हें हम मनुष्य कहें सकते रें बार मनुष्यों में भी पेने प्राणी होते हैं किन्द्रे हम

पशु कर भारत है इससे मालूम होता है कि मतुष्य होते पर भी मतुष्यय मिलना मुश्किल है। इसीलिये उत्तराष्ययन की

में घार दुर्लमों में खबसे पहिला दुर्लम पस्तु मतुष्यस्य पढ़ला गर है, वहां पर मतुष्यमय न लिखकर जो मतुष्यस्य तिया गया है उसने क्कार्य को यहन गर्म्मार बना दिया है। समल जीवन बनाने के लिये यह सबसे पहिली गर्व है।

को इस पार्टिसी शर्त को पूर्व कर सका यह कामे की तीन शर्मों को भी पूर्व कर सकेता। सब पूछा जाय तो कामे की तीन शर्में, मनुष्यत्व के दें। पूर्व विकास के लिये हैं।

दूसरों गुर्न है ग्राखहान। यो नो ग्राखहान होना सरक्ष है। इग्र वीय वर्ष रमाइने रमाइने नभी विज्ञान वन खाते हैं। बात बात में अर्भ र विज्ञाना खाता है। परंतु सबा ग्राख्यान, अर्भ के रहस्यों के परिवानने की योग्यता मृतिकल है। जैनतार के बातका सार इतना ही है कि "भर्मे साम्या में है बादर नहीं। अर्भ न तो महितों में है न ममिलिय़ें में, व तीथों में, न विविधी में, वह तो भारती भारता में हैं। शैरी ने अर्भ का बार ग्राट एसिटमान निवाह । खानि बौरकुत को पूर्म बाह का दिवार करते हैं। ये शह मोल के श्रापेंग्र में औं पूर्व महत्व का दिवार करते हैं। ये शह मोल के श्रापेंग्र में शिक्षा होंग्री की विवास करते पर भी कि का बारी चालमा की ग्राल को न बहुवाया, शरीर की गृहि का ग्राह्म के पीये हो बहुत रहा वह विकास ही विश्वास करते हों तो में सम्बद्धार्थ कही

र्रमालों हे सब से बई जिल्ला यह है कि यह बहेरी (क्ष्मकोंकों से वर्ष का ब्राह्मिक कहा सामग्र किसने हरूसे ब्राह्मकोंकों से वर्ष का ब्राह्मकों का स्पर यहिए। श्रास्त्र

٠٠,



बेडानहीं देता। धरिश कहता है कि झल्मा को परिचारों और जो हुए कर सफते हो करों। यह स्थान में भी नहीं विचारी कि मुक्ते इस बात का कथिकार है या नहीं। तुम्पु से तुम्पु, नींच से नींच प्रार्टी को धर्म पातन करने का झनना अधिकार है। जो उन झनना सधिकारों और झल्मा की झनना ग्रांकि में विश्वास रनाता है वहीं सक्षा धड़ानु है।

बौधी दुलेम यस्तु है संयमकाति । संसार मे यह पदाँध सपने स्थिक दुलेम है परंतु जितता ही कि इ दुलेम है सोगों ने हमें इतना ही कथिक गितवाड़ की यस्तु बना रक्ता है। जिन लोगों में मनुष्यत्व नहीं, हान नहीं, धवानहीं, वे संयमी बनेते की बींग होंकते हैं। संयम की जैसी मिट्टी प्रसंद हुई है बेसी किसी की नहीं हुई है।

संबन के गाँद सापनों को संबम समस्ता सब से पड़ी मूल है। उपवास, रसन्वाम, अनेक तरह के वेप, स्त्री पुरुषों का स्ताम आदि संबम के साधन हो सकते हैं परंतु वे स्ववंसवम नहीं हैं। तिर संबम प्या है और संबमी कीन हैं?

संपन है मनको वहाँ सकता। कपायों को दूर रखना। जो मनुष्य हमारा रहा से दहा कानिए कर रहा हो उस पर मी दिसे छोध नहीं काठा. दिसे अपनी विहसा तथा छादि का घमएड नहीं है, जो अपनी पृत्यता का भी धमएड नहीं करता, जो परा का मिखारी नहीं है, जिसके हद्य में रंपी नहीं है, जो दूसरे के परा को सह सकता है, जो छूट का राष्ट्र हो, विश्वतम ही जिसकी समहाति है, जो हत कपट से दूर है, विश्वतम ही जिसकी समहाति की मिट्टी के समान समसाह, जो बनारता का मंदार है, पानियों की देलकर जी चुला न करके ब्या करता है, विराधी के साथ भी जो मित्र कैमा मर्गात करता है। जो शहनशीलता का घर है, यहां संवर्धा है, यही

साजु है। वही जगन के लिये मात स्मरणीय है। परंतु वेला संयम मिलना मुश्किल है । तपस्या का भेप चाना करने वाले (नापु) भारत में करीय ६० लाख ध्यति

है इनमें ऐसे हिलने हैं जिनकी क्यांचे पानी में कींची गई लकीर के समान शीप ही शिलीन देखानी ही। जिनमें सचा स्थाप और सर्था उदासीनता हो है येसे ध्यक्ति चानुनियों पर नहीं तो चानुनिया के योग पर अकर विने आ सकते हैं दर्शालिय उत्तराध्ययन में रायम की पूर्णन कहा है।

इत चार दुर्लेस वस्तुचा को जा वा शका है उनीका जीवन

नारस है।क ( जेनवदाग)

इस केम के संप्रद करने के दिने प्रेन वकाम व स्टिन्ट ने बद्दे बहुर्शन ही है, जिनके बिन इस चलका दाव र अपने हैं।

## सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमरे.

स्थापना सन १९२५ ई०: मृलधन ४५०००।

उद्देश-सन्ते में सन्ते महर में ऐसे धार्मिक, वित्तव, समाव मुधार एत्यन्यी और राजनैतिक साहित्य को प्रशासित करना तो देश को न्यास्य के लिए नैप्यार पनाने में सरायक हो, नवयुवकों में नवजीवन का बेपार को, जीन्यारंग्य और अष्ट्रोद्धार आन्दोलन को बल मिले।

संस्थापक-नेत्र पनस्यामहासर्वा विद्रुता ( सनापति ) सेठ

हममाराहार्यः द्वारा भारि सात्र सम्बन्धः । मेंटल से—न्युर्वनमानमास्य और सपुन्तापृतिमाटा ये हो आडाप् म्हारित होत्यं है । पहुर हनका नाम सम्बंसाया और महीर्यमाटा या ।

म्ह्यायात्र हार्यः है । पहर इनका नाम सम्बामाध्य क्षार प्रकारमाध्य या । नाष्ट्र निमाश्यमाला (सम्बंगाखा) से प्रीम क्षार सुनिश्चित खोगी के लिए संबंध स्वांक्षय को इमार्थे निवलता है ।

त्यपु रामार साहाय वा पुनाव । वयनता ६ । राष्ट्र-ज्ञाननिमाता (वर्यासमारा) में समान सुधार,झाम-संगठन, स्टारोद्धाः और राजीतिक आगृति उत्तय बरमेवास्य दुराई निकटली हैं ।

न्याई बाहद होने के नियम

(१) रण्युंत १ वह साला स वर्ष वह से इस से इस सोला होलाई सो दूरी दो दूराक स्वाधान होता है। (१) सार्येष्ट साला वो दुल्लाई का साद कार कर स्थान होता है। स्वापेष्ट हैं। स्वापेष्ट हेंगी सालाओं हा लु सारित है। स्वापेष्ट हैंगी सालाओं हा लु सारित है। स्वापेष्ट हैंगी सालाओं हा लु सारित है। स्वापेष्ट हैंगी सालाओं का एक हरिता है। स्वापेष्ट हैंगी सालाओं का एक हरिता है। है साथ साला हा रामार्थी होंगी सालाओं का एक हरिता है। (१) विसा साला हा रामार्थी होंगी से स्वाप्त हैंगी सालाओं को साला हो रिताल क्यों हैं स्वाप्त हैं का होंगी हैं। हिए हर्गी की हा हर होंगी साला है हिए साला है हैंगी हैं साला हर्गी हैं हिए हर्गी के हिए हर्गी हैं हिए हर्गी हैं हर्गी हैं हर्गी हरिताल हर्गी हैं हर्गी हरिताल हर्गी हैं हर्गी हरिताल हरी हैंगी हरिताल हर्गी हैं हर्गी हरिताल हरि







## आदर्श जैन धिं। चा॰ मी॰ मार 1

''इन'' वह साधारण मनव्य । दो मात्रा विद्वा हक्षा यह "जैन"।

ज्ञान र्थ्योर क्रिया की दो मात्रा ( परिवे ) ।

दो पाँखों से ऊँचा चटकर. जगत का निरीत्तरा कर वह जन।

जीतने की श्रमिलापा वाला वह जैन । विजय लक्ष्मी से बरा हुन्ना वह जैन । भमग्रहल की विभवि जैन महासागर को वस्ता है।

बिलोक को साप सी जैन । निज के दोपों को जीते सो जैन ।

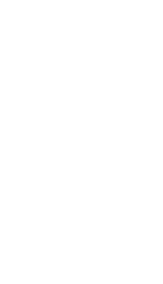
जगन मात्र का भला चाहा करे वह जैन । जैन के हृदय में, कार्य्य में कोध की वासना न ही।

शानित की तरंगे उद्यलती रहें ।

जैनी मेरा, यह सत्य नहीं; परन्तु सत्य सो मेरा। जैन कभी कायर नहीं होता । शर वीरता श्रौर धीरता धारे सो जैन । बिलास को विष सनि सो जैन ।

इस्ताह में ऊँचा उछले सो जैन। जगन मात्र को ऋपना माने सो जैन । शरीर और श्रात्मा को भिन्न सममें सो जैन । जगत् को नाचता देखें सो जैन ।

सर्वथा स्वतंत्र हो सो जैन । शरीर र्फ़ौर मन पर राज्य करे नो कैं जगत् जिसके वशीभूत होवे वह जैन ।



## आदर्श जैन [र्था॰ बा॰ बी॰ शहः]

"जन" वह साधारण मनुष्य । दो मात्रा विदा हम्बा वह "जैन" ।

झान श्रीर किया की दो मात्रा (पीये )। दो पॉस्वो से कैंचा चट्कर.

जगत का निरीज्ञण करे वह जन । जीतने की श्रमिलापा वाला वह जैन । विजय लक्ष्मी से वरा हुश्चा वह जैन । भूमण्डल की विभृति जैन महासागर को वरनी है।

त्रिलोफ को नापे सो जैन । निज के दोपों को जीते सो जैन । जगन मात्र का भला थाहा करे वह जैन ।

जगत भात्र का भला आहा कर वह जन । जैन के दृदय में, कार्य्य में क्षोध को वामना न हो । शान्ति की वर्रो उद्दलवी रहें ।

जैनी मेरा, यह सत्य नहीं, परन्तु सत्य मी मेरा। जैन कभी कायर नहीं होता।

जन कमा कायर नहां होता । शृद वीरता श्रीर धीरता घारे मो जैन । विलास को विष माने सो जैन । उत्साह में ऊँचा उद्दले सो जैन । जगन् मात्र को छपना माने सो जैन । शरीर श्रीर श्रास्मा को भिन्न सममें सो जैन ।

शरार आर बाला का लग्न क्या सार जगत् को नाचता देखे सो जैन । सर्वथा स्वतंत्र हो सो जैन । शरीर खौर मन पर राज्य करे मो जैन ।

जगत् जिसके वशीभूत होने वह जैन ।